जनवरी 2025

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

बाबा साहब की शान में

समाजवादी मैदान में

R.N.I. No. 68832/97

www.samajwadiparty.in

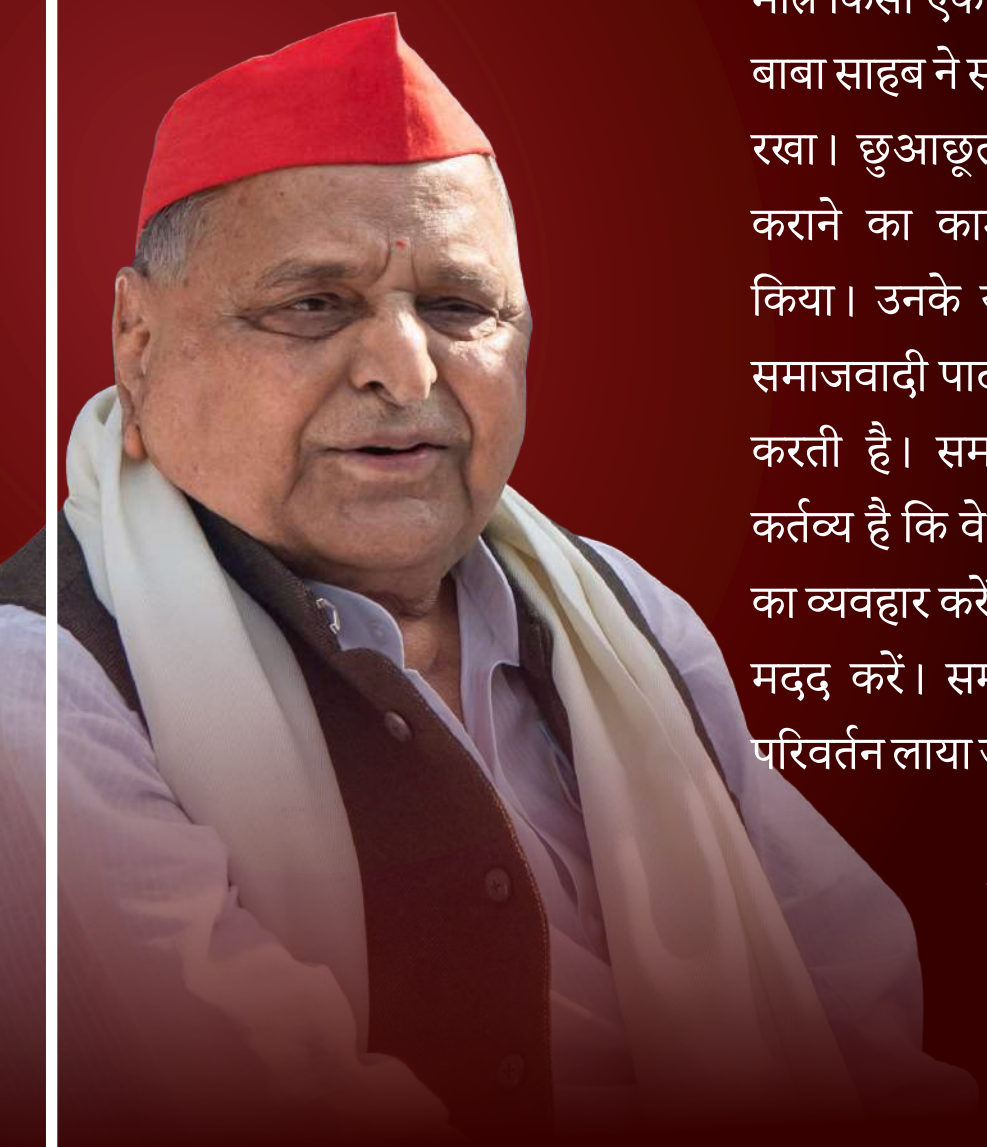

बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर मात्र किसी एक जाति के नेता नहीं थे। बाबा साहब ने सभी जातियों का ख्याल रखा। छुआछूत को समाज से खत्म कराने का काम जोरदार तरीके से किया। उनके योगदान की वजह से समाजवादी पार्टी उनका बहुत सम्मान करती है। समाजवादी साथियों का कर्तव्य है कि वे सभी के साथ बराबरी का व्यवहार करें। गरीबों-मजलूमों की मदद करें। समता से ही सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

जनवरी 2025
वर्ष 26 | संख्या 03

प्रिय पाठकों,

नव वर्ष की शुभकामनाएं

आपके स्नेह की बदौलत समाजवादी बुलेटिन अपने रजत जयंती वर्ष में PDA की सशक्त आवाज़ बन चुका है। PDA की एकता की गांठ को और मजबूत करने के लिए हम PDA काव्य विचार शुरू करने जा रहे हैं। जिसके अंतर्गत पाठकों द्वारा PDA पर स्वरचित एक लघु कविता को प्रत्येक महीने समाजवादी बुलेटिन में स्थान मिलेगा। फरवरी 2025 के अंक से इसकी शुरुआत होगी।कृपया ध्यान रखें कि केवल उन्हीं लघु कविताओं पर विचार किया जाएगा जो PDA केन्द्रित, सुस्पष्ट, मौलिक, न्यूनतम 4 से 6 लाइनों में टाइपशुदा होंगी और जो हमें प्रत्येक माह की 7 तारीख तक अनिवार्य रूप से मिल जाएंगी। अपनी लघु कविता ईमेल teamsbeditorial@gmail.com पर अपने नाम और पते के साथ भेजें।

सादर धन्यवाद

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

लोकतंत्र में 'एक' शब्द ही अलोकतांत्रिक 24

08 कवर स्टोरी

बाबा साहब की शान में समाजवादी मैदान में

...ये हिन्दुस्तान सबका है 04

आजादी के 75 वर्ष पर लोकसभा में संविधान पर चर्चा के दौरान समाजवादी पार्टी संसदीय दल के नेता व समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बेबाकी व तार्किक ढ़ंग से अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि संविधान हम सबका रक्षा कवच है। हम सबकी ढाल है।

किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह को नमन 36

नव वर्ष पर PDA के सम्मान की लड़ाई जारी रखने का संकल्प 34

...ये हिन्दुस्तान सबका है

बुलेटिन ब्यूरो

आजादी के 75 वर्ष पर लोकसभा में संविधान पर चर्चा के दौरान समाजवादी पार्टी संसदीय दल के नेता व समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बेबाकी व तार्किक ढ़ंग से अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि संविधान हम सबका रक्षा कवच है। हम सबकी ढाल है। संविधान हमें शक्ति देता है। संविधान ही देश की 90 फीसदी उपेक्षित पीड़ित, वंचित जनता के अधिकारों का सच्चा संरक्षक है। देश के कमजोर वर्ग खासकर पीडीए के लिए संविधान की रक्षा जन्म-मरण का विषय है। संविधान ही लोकतंत्र की प्राणवायु है।

लोकसभा में 13 दिसंबर को चर्चा में हिस्सा लेते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी ने कहा था कि संविधान कितना भी अच्छा हो यदि उसे लागू करने वाले अच्छे नहीं होंगे तो परिणाम अच्छे नहीं निकलेंगे। उन्होंने कहा कि संविधान की प्रस्तावना उसका निचोड़ है। उसमें सरकार के उद्देश्यों का स्पष्ट उल्लेख है। संविधान में सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी धर्म निरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य का उल्लेख है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि इस सरकार में लोकतंत्र के साथ जितना खिलवाड़ हुआ है ऐसा कभी नहीं हुआ। संविधान को परतंत्र बनाकर जो लोग राज करना चाहते हैं उनके लिए आजादी का अमृतकाल सिर्फ जुमला है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि आज अन्याय के खिलाफ बोलने पर जेल हो रही है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ देशद्रोह हो गया है। इस सरकार में अगर कोई भाजपा के मत का नहीं है, दूसरी विचारधारा और धर्म का है तो पूजा करने पर भी दिक्कत पैदा की जा रही है। हर मस्जिद के नीचे मंदिर खोजने वाले लोग देश में शांति नहीं रहने देना चाहते हैं। उन्हें कानून की कोई परवाह नहीं। इस सरकार में लोगों की गरिमा लिंचिंग से धूल धूसरित हो चुकी है। उद्योगपति सरकारी आतंक से परेशान हैं। देश छोड़कर जा रहे हैं। आजादी के बाद कभी इतने उद्योगपति देश छोड़ कर नहीं गए जितना इस सरकार में चले गये।

श्री यादव ने कहा कि अगर आपसी मतभेद पैदा किया जाएगा तो देश की एकता अखंडता के लिए खतरा होगा। संविधान में हर व्यक्ति के लिए कानून की समानता है लेकिन भाजपा सरकार में एक ही कानून लोगों के लिए अलग-अलग है। सत्ता पक्ष के लोग अगर गाली देते हैं तो भी जी हजूरी होती है और विपक्ष के लोग न्याय और हक मांगने जाते हैं तो उन्हें लाठी मारी जाती है। भाजपा सरकार में संविधान के मौलिक अधिकारों का दुरुपयोग हो रहा है। फर्जी एनकाउण्टर में हत्याएं हो रही हैं। जेल के अंदर हत्याएं हो रही हैं। पुलिस अभिरक्षा में हत्याएं हो रही हैं। ईडी के जरिए किसी को भी बिना नोटिस जेल में डाल दिया जा रहा है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश में जो हालत हैं, ऐसी कभी नहीं देखी गयी। कानून की धज्जियां उड़ायी जा रही हैं। उत्तर प्रदेश में लोगों को न्याय नहीं मिल रहा है। न्याय न मिलने से लोग आत्मदाह कर रहे हैं। तहसील, थाने यहां तक कि मुख्यमंत्री आवास के सामने लोग आत्मदाह करने पर विवश है। यूपी कस्टोडियल डेथ में देश में सबसे आगे है। महिला उत्पीड़न में नम्बर एक पर है यह सब सरकार के ही आंकड़े हैं।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने निवेश और नौकरियों के बड़े-बड़े सपने दिखाए लेकिन नौजवानों को नौकरिया नहीं मिलीं। उत्तर प्रदेश विकास के हर मानक में पीछे है। जानबूझकर पेपर लीक कराया जाता है। परीक्षाओं को रद्द कराने के लिए पेपर लीक कराये जाते हैं। अग्निवीर आधी-अधूरी नौकरी है। हम लोग इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे। हम जब भी सत्ता में आएंगे सेना भर्ती की पुरानी व्यवस्था लागू करेंगे। जवान पक्की वर्दी पहनेंगे तो देश की सीमाएं और मजबूत होंगी।

श्री अखिलेश यादव ने बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी समेत देश के संविधान निर्माताओं को याद करते हुए उन्हें नमन किया। उन्होंने कहा कि बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी ने हमें महान संविधान देने का काम किया। उनकी प्रबुद्ध दृष्टि का परिणाम है कि हमारे पास न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व के सिद्धांतों पर आधारित हमारा एक महान संविधान है। भारत राज्यों का एक संघ है। हमें विविधता में एकता पर गर्व है। हमारे संविधान ने भाषाई, क्षेत्रीय, धार्मिक और जातीय विविधता वाले भारत देश को एक साथ रखा है।

संविधान बनाने के समय बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि संविधान की सफलता इस पर निर्भर करेगी कि हम

फोटो स्रोत : गूगल

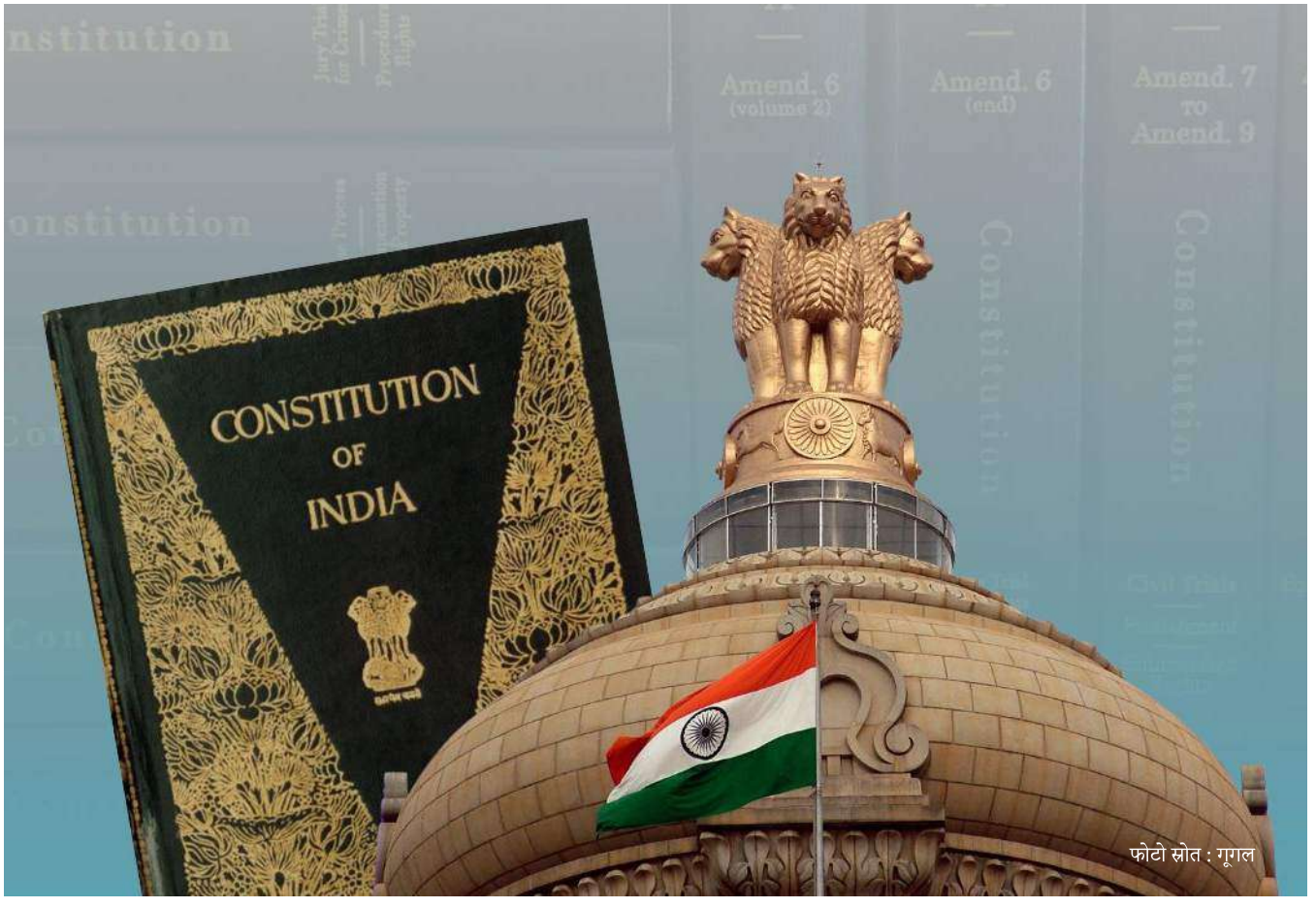

फोटो स्रोत : गूगल

उसके अनुसार कैसे कार्य करते हैं। विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका की जिम्मेदारी है कि इस महान देश का शासन हमारे संविधान में निहित उच्च सिद्धांतों के अनुसार चलाया जाए। उन्होंने कहा था कि हमने संविधान का निर्माण बहिष्कृत, वंचित वर्गों को अधिकार दिलाने के लिए किया है।

श्री यादव ने कहा कि सीमाओं की रक्षा करना सम्प्रभु राष्ट्र का प्रथम कर्तव्य है। लेकिन आज कई जगह पर सीमाएं सिकुड़ रही हैं। पड़ोस में चीन सीमा पर कितने गांव बस गए हैं। सीमा पर रेजांग्ला के मेमोरियल को तोड़ दिया गया। आज रेजांग्ला मेमोरियल वहां नहीं है, जहां पहले था। अगर इस पर गंभीरता से न विचार किया गया तो एक दिन पड़ोसी देश हमारे लोगों को कैलाश और मानसरोवर जाने से रोक देगा। यह सोचने का विषय है। आजादी के 75 साल बाद हमारी सीमाएं कितनी सुरक्षित है? वह सिकुड़ती जा रही है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि संविधान में समाजवादी गणराज्य का उल्लेख है। जिसका अर्थ है देश में समता और सम्पन्नता हो लेकिन 2014 के बाद देश में विषमता इतनी तेजी से बढ़ी है जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। हालत यह है कि देश की 140 करोड़ की आबादी में से 82 करोड़ लोग सरकारी अन्न पर जिंदा हैं। 82 करोड़ लोग सरकारी अन्न पर जिंदा हैं और देश की दो तिहाई सम्पत्ति पर कुछ परिवारों का कब्जा है। अगर सरकार में हिम्मत है तो बताएं कि 60 फीसदी गरीबी से नीचे रहने वाले लोगों की प्रति व्यक्ति आय क्या है?

श्री यादव ने कहा कि हमारा संविधान धर्मनिरपेक्ष राज्य की बात करता है। राज्य की नज़र में सब बराबर है। संविधान सेकुलर इक्लिटी सिखाता है। क्या सरकार इस पर अमल कर रही है। देश की दूसरी बड़ी जनसंख्या 20 करोड़ मुसलमानों को देश का दूसरे दर्जे का नागरिक बनाने का प्रयास हो रहा है। उन पर अत्याचार प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। उनकी सम्पत्ति को लूटा जा रहा है। हत्याएं की जा रही है। घर तोड़े जा रहे हैं। प्रशासन की मदद से उनके पूजा स्थलों पर कब्जा हो रहा है। अगर यही धर्मनिरपेक्षता है तो धर्म शासित राज्य की क्या परिभाषा है?

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि अभी पिछले दिनों उत्तर प्रदेश में जानबूझकर कई घटनाएं हुईं। उत्तर प्रदेश में चुनाव के दौरान लोगों को वोट डालने के अधिकार से रोका गया। जो

लोग वोट डालने जा रहे थे उन्हें डराया, धमकाया गया। बूथों पर जाने से रोकने के लिए पूरा सरकारी तंत्र लगा दिया गया। पूरी दुनिया ने देखा कि किस तरह से उत्तर प्रदेश सरकार के प्रशासन के इशारे पर एक पुलिस अधिकारी ने महिलाओं को रिवाल्वर दिखाकर धमकाया और वोट डालने से रोका। सच्चे लोकतंत्र में जनता स्वतंत्रता पूर्वक मतदान करती है, लेकिन जिस तरह का दृश्य उत्तर प्रदेश में दिखाई देता है, क्या यही लोकतंत्र है। यह सरकार सरकारी मशीनरी के जरिए जहां चाहे अपनी सरकार बना लेती है। जनता के मत का कोई अर्थ नहीं है। इसे लोकतंत्र नहीं कहा जा सकता है। यह व्यवस्था तानाशाही की तरफ बढ़ रही है। हिटलर ने भी जनता द्वारा चुने जाने के बाद संविधान में संशोधन करके तानाशाही कायम कर दी थी। यह सरकार उसी तरह तानाशाही कर रही है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि हम सभी जातियों को उनका हक और अधिकार दिलाने के लिए जातीय जनगणना चाहते है। अगर यह सरकार जातीय जनगणना नहीं कराएगी तो जब हमें मौका मिलेगा, हम जातीय जनगणना कराएंगे और अधिकारों से वंचित जातियों को उनका हक दिलाएंगे। उन्होंने कहा कि आरक्षण पिछड़ों, दलितों और वंचित जातियों को सामाजिक न्याय दिलाने का बड़ा अस्त्र था लेकिन यह सरकार उसे समाप्त कर रही है। आउटसोर्सिंग और कान्ट्रैक्ट पर जो नौकरियां दी जा रही हैं उनमें दलितों पिछड़ों को आरक्षण नहीं है। शिक्षण संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में चयन के समय दलित, पिछड़े वर्ग के अभ्यर्थियों के सामने नाट फाउण्ड सुटेबल लिख दिया जाता है। सरकारी उपक्रम बेचे जा रहे है। प्राइवेट उपक्रमों में आरक्षण नहीं है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि केन्द्रीय शिक्षामंत्री केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों की सूची जारी करके बताएं कि कितने प्रतिशत दलित, पिछड़े वर्ग के प्रोफेसर हैं। यह सरकार केवल 10 फीसदी लोगों के लिए काम कर रही है। 90 फीसदी का ख्याल नहीं रखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि जातीय जनगणना जातीय भेदभाव नहीं बढ़ायेगा बल्कि यह जातियों के बीच दूरियां कम करेगा।

श्री यादव ने कहा कि आर्थिक न्याय के बगैर सामाजिक और राजनीतिक न्याय नहीं मिल सकता है। यह धन्नासेठों की सरकार गरीबी का नाजायज फायदा उठाकर राजनीतिक न्याय का अपहरण कर रही है। कर्ज में डूबी बड़ी आबादी महाजन के दबाव में अपनी इच्छा के विरूद्ध वोट देने पर विवश है। चुनाव में सत्ताधारी दल के पैसे के सामने कोई सामान्य कार्यकर्ता चुनाव नहीं लड़ पा रहा है। पैसे के बल पर बड़े पैमाने पर धनवान चुनाव जीत कर आते है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि संविधान बचेगा तो न्याय बचेगा, न्याय बचेगा तभी सबको बराबरी और सम्मान और बराबर मौके मिलेंगे। भेदभाव मिटेगा। इसलिए संविधान को बचाने के लिए एक और करो और मरो आंदोलन की जरूरत है। पिछले चुनाव में सत्तापक्ष के बहुत लोग कहते थे कि संविधान बदल देंगे। वह जनता को धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने भाजपा के चार सौ पार के नारे को गिरा दिया और विपक्ष को इतनी ताकत दे दी कि भाजपा का संविधान बदलने का सपना तोड़ दिया।

श्री अखिलेश यादव ने संविधान चर्चा के अंत में पूर्व सांसद श्री उदय प्रताप सिंह जी की कविता केहवाले से कहा-

न मेरा है न तेरा है, ये हिन्दुस्तान सबका है।
नहीं समझी गयी यह बात तो नुकसान सबका है।
हजारों रास्ते खोजे गए उस तक पहुंचने के।
मगर पहुंचे हुए लोग कह गए भगवान सबका है।
जो इस मंजिल गयी नदियां दिखाई नहीं देती।
महासागर बनाने में मगर एहसान सबका है।
अनेकों रंग, खुशबू, नस्ल के फल फूल पौधे हैं।
मगर उपवन की इज्जत आबरू, ईमान सबका है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि हमें उम्मीद है कि इस चर्चा के बाद बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर के दिए हुए संविधान को बदलने का सपना नहीं देखा जाएगा। साथ ही साथ डॉ राममनोहर लोहिया जिन्होंने समाजवादी आंदोलन का रास्ता दिखाया था, नेताजी ने संघर्ष करके इस जगह पहुंचाया, जयप्रकाश नारायण जी ने सम्पूर्ण क्रांति का नारा देकर देश को आह्वान किया था, उन सभी महान नेताओं को याद करता हूं।

बाबा साहब की शान में समाजवादी मैदान में

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर के सम्मान पर आंच आते ही डटकर भाजपा को ललकारा है।

श्री अखिलेश यादव की यह पहलकदमी समाजवादी पार्टी की उसी विरासत का विस्तार है जिसके अंतर्गत समाजवादी पार्टी शुरू से ही बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर का मान-सम्मान बचाये रखने के लिए न सिर्फ संकल्पित रही है बल्कि समाजवादी नेतृत्व यह कहता रहा है कि दलितों, वंचितों, शोषितों को अधिकार दिलाने के लिए बाबा साहब के योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

समाजवादी विचारक डा राम मनोहर लोहिया व समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव भी यह मानते रहे हैं कि बाबा साहब किसी एक जाति के नहीं बल्कि सभी समुदाय के नेता रहे हैं। डा लोहिया हमेशा ही डा अंबेडकर के कायल रहे। समाजवादी पार्टी की स्थापना से अब तक का इतिहास भी इस बात का गवाह है कि डा अंबेडकर के मान-सम्मान और उनकी नीतियों, विचारधारा को सबसे ज्यादा किसी ने आगे बढ़ाया है तो वह समाजवादी पार्टी ही रही है। डा अंबेडकर गरीबों, शोषितों और वंचितों की तरक्की के लिए चिंतित रहा करते थे तो समाजवादी पार्टी ने भी इसे अंगीकार कर इसी वर्ग की लड़ाई लड़ी। नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव ने पार्टी की स्थापना ही शोषितों, गरीबों, वंचितों के उत्थान के लिए की और इस वर्ग की लड़ाई लड़ी। यही वजह रही कि समाजवादी पार्टी अपने शुरुआती समय से ही प्रभुत्ववादी ताकतों से लड़ती और मुकाबला करती आ रही है।

सामाजिक न्याय की अवधारणा को स्थापित करने और सभी को बराबरी का दर्जा देने का जो अभियान चला उसे अब समाजवादी पार्टी के मुखिया श्री अखिलेश यादव और धार दे रहे हैं।

श्री अखिलेश यादव की स्पष्ट सोच का ही नतीजा है कि अब देश में जातीय जनगणना की बात जोर पकड़ रही है।

श्री अखिलेश यादव ने अब यह स्थापित कर दिया है कि बिना जातीय जनगणना के वंचितों, शोषितों का भला होने वाला नहीं है। वह साफतौर पर कहते हैं कि समाजवादी पार्टी का संकल्प है कि जातीय जनगणना

संविधान
जिंदाबाद

कराकर वह समाज के निचले तबके को अधिकार दिलाकर ही मानेगी।

श्री अखिलेश यादव ने सामाजिक न्याय की लड़ाई को अंजाम तक पहुंचाने के लिए P D A यानी पिछड़ों, दलितों व अल्पसंख्यकों को एकजुट करने की जो मुहिम शुरू की उसका स्पष्ट नतीजा लोकसभा चुनाव 2024 में देखने को मिला जब पिछड़ों, दलितों और अल्पसंख्यकों ने एकजुटता दिखाते हुए समाजवादी पार्टी को यूपी से 37 सीटें देकर देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बना दिया। यह इस बात का भी संकेत है कि पीडीए को श्री अखिलेश यादव की बात समझ में आ गई कि उनकी एकजुटता में ही ताकत है और समाजवादी पार्टी और उसके मुखिया श्री अखिलेश यादव ही उनके सच्चे हितैषी हैं।

श्री अखिलेश यादव की यह लड़ाई अभी मुकाम तक नहीं पहुंची है इसीलिए पीडीए को 2027 का इंतजार है जब यूपी में विधानसभा के चुनाव होंगे और समाजवादी सरकार बनेगी क्योंकि PDAसमाज यह बात बखूबी जान चुका है कि भाजपा जातीय जनगणना की हिमायती नहीं है और वह जानती है कि अगर जातीय जनगणना कराई गई तो पिछड़े, दलितों और अल्पसंख्यकों को आबादी के हिसाब से उन्हें अधिकार देना होगा जो कि प्रभुत्ववादी सोच रखने वाली भाजपा को कतई मंजूर नहीं है।

पीडीए को यह समझ में आ गया है कि श्री अखिलेश यादव के मुख्यमंत्री बनने पर ही जातीय जनगणना के जरिये उसे उनका अधिकार मिलने वाला है जोकि बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर की परिकल्पना में था। बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर की सोच के अनुरूप समाजवादी पार्टी निरंतर आगे बढ़ रही है। दलित समाज को भी यह भान हो चुका है कि बाबा साहब के नाम पर राजनीति करने वालों ने सिर्फ उन्हें छला है और अपनी राजनीतिक रोटी सेंकी है। बाबा साहब के मिशन के नाम पर उन्होंने अपना जीवनस्तर तो ऊपर उठा लिया मगर दलित समाज को वहीं का वहीं छोड़ दिया जबकि समाजवादी पार्टी लगातार दलित समाज को आगे बढ़ाने और उनकी राजनीतिक हैसियत बढ़ाने में जुटी हुई है। इसका उदाहरण अयोध्या में दिखा भी जब श्री अखिलेश यादव ने दलित समाज के श्री अवधेश यादव को आगे किया और देश की राजनीति में स्पष्ट संदेश दे दिया कि आने वाला दिन PDA का ही है।

दरअसल दलित समाज के श्री अवधेश प्रसाद की फैजाबाद संसदीय सीट, अयोध्या जिसके अंतर्गत आता है, पर भाजपा के खिलाफ शानदार जीत भाजपा को अखर गई। उसकी समझ में आ गया कि अब दलित समाज श्री अखिलेश यादव के PDA के साथ पूरी तरह जुड़ चुका है।

यही वजह रहा कि लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद से ही भाजपा ने दलित समाज के खिलाफ अभियान छेड़ दिया।

इसपर भी उसकी दाल गलती नहीं दिखी। यह भाजपा की खीझ ही थी कि देश के गृहमंत्री ने दलितों के मसीहा बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर के खिलाफ अत्यंत अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया।

बाबा साहब के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने वाले गृहमंत्री यह भूल गए कि PDA का नेतृत्व अब श्री अखिलेश यादव कर रहे हैं। बाबा साहब पर टिप्पणी से आहत श्री अखिलेश यादव मुखर होकर भाजपा के खिलाफ खड़े हो गए और उन्होंने संसद से सड़कतक भाजपा के खिलाफ जंग का ऐलान कर दिया। यह श्री अखिलेश यादव ही थे जिन्होंने संसद में इस टिप्पणी का कड़ा प्रतिवाद तो किया ही, पूरे देश में भाजपा के खिलाफ एक अभियान चला दिया।

उन्होंने पीडीए पर्चा के जरिये बताया कि प्रभुत्ववादी सोच रखने वाली भाजपा किस तरह दलितों के मसीहा के खिलाफ जहर उगल रही है। उनका संविधान देश की संजीवनी है और PDA की ताकत।

बाबा साहब पर टिप्पणी को लेकर समाजवादी पार्टी के सांसदों ने दिल्ली में मार्च किया तो उत्तर प्रदेश के हर जिले में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता डटकर भाजपा के खिलाफ खड़े हो गए। इतना ही नहीं बाबा साहब के विचारों को जन जन तक पहुंचाने के लिए श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर पूरे यूपी में PDA चर्चा कार्यक्रम का ऐलान कर दिया गया।

बाबा साहब की शान पर आंच आने के खिलाफ जिस तरह समाजवादी पार्टी सामने आई और भाजपा से मुकाबला कर रही है तो उन दलों में भी बेचैनी स्वाभाविक है जोकि दलित समाज को सिर्फ वोट बैंक समझकर अपना उल्लू सीधा कर रहे थे और भाजपा से नूराकुश्ती का खेल खेल रहे थे।

बाबा साहब के सम्मान की लड़ाई समाजवादी पार्टी के संभाललेने विचलित ऐसे दलों ने महज औपचारिकता दिखाकर दलित समाज को फिर मूर्ख बनाने की नाकाम कोशिश की मगर दलित समाज के बीच वह अब बेपर्दा हो गए हैं।

दलित समाज की समझ में आ गया है कि उनका हितैषी कोई है तो वह एकमात्र श्री अखिलेश यादव और उनकी समाजवादी पार्टी है। समाजवादी लोग ही उनके अधिकार की लड़ाई बाबा साहब के जमाने से लड़ते रहे हैं और आगे पूरी ईमानदारी से यही समाजवादी उन्हें उनका हक दिलाएंगे। जाहिर है, दलित समाज तेजी के साथ समाजवादी पार्टी और उसके PDA से जुड़ चुका है और 2027 में वह जातीय जनगणना के जरिये अधिकार पाने के लिए समाजवादी सरकार चाहता है।

हो 'बाबासाहेब' के मान पर चर्चा अब घर-घर पहुंचे 'पीडीए पर्चा'!

प्रिय पीडीए समाज,

'प्रभुत्ववादियों और उनके संगी-साथियों' के लिए बाबासाहेब सदैव से एक ऐसे व्यक्तित्व रहे हैं, जिन्होंने संविधान बनाकर शोषणात्मक-नकारात्मक प्रभुत्ववादी सोच पर पाबंदी लगाई थी। इसीलिए ये प्रभुत्ववादी हमेशा से बाबासाहेब के ख़िलाफ़ रहे हैं और समय-समय पर उनके अपमान के लिए तिरस्कारपूर्ण बयान देते रहे हैं।

'प्रभुत्ववादियों और उनके संगी-साथियों' ने कभी भी बाबसाहेब के 'सबकी बराबरी' के सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से समाज एक समान भूमि पर बैठा दिखता जबकि प्रभुत्ववादी और उनके संगी-साथी चाहते थे कि उन जैसे जो सामंती लोग सदियों से सत्ता और धन पर क़ब्ज़ा करके सदैव ऊपर रहे हैं वे हमेशा ऊपर ही रहें और पीडीए समाज के जो लोग शोषित, वंचित, पीड़ित हैं वे सब सामाजिक सोपान पर हमेशा नीचे ही रहें। बाबसाहेब ने इस व्यवस्था को तोड़ने के लिए शुरू से आवाज़ ही नहीं उठाई बल्कि जब देश आज़ाद हुआ तो संविधान बनाकर उत्पीड़ित पीडीए समाज की रक्षा का कवच भी बनाकर दिया। आज के 'प्रभुत्ववादियों और उनके संगी-साथियों' के वैचारिक पूर्वजों ने बाबासाहेब के बनाए संविधान को अभारतीय भी कहा और उसे सभ्यता के विरुद्ध भी बताया क्योंकि संविधान ने उनकी परंपरागत सत्ता को चुनौती दी थी और देश की 90% वंचित आबादी को आरक्षण के माध्यम से हक़ और अधिकार दिलवाया था, साथ ही उनमें आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की स्थापना भी की थी।

'प्रभुत्ववादियों और उनके संगी-साथी' सदैव आरक्षण के विरोधी रहे हैं। सदियों की पीड़ा और आरक्षण दोनों ही पीडीए को एकसूत्र करते हैं, चूंकि बाबा साहेब 'संविधान' और 'सामाजिक न्याय' के सूत्रधार थे, इसीलिए ऐसे प्रभुत्ववादी नकारात्मक लोगों को बाबा साहेब हमेशा अखरते थे। बाबासाहेब ने हर एक इंसान को एक मानव के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने के लिए आंदोलन में हिस्सा लेने की बात कही भी और ख़ुद करके भी दिखाया व तथाकथित उच्च जाति और सांमती शोषण को साहसपूर्ण चुनौती भी दी। बाबासाहेब ही आत्म सम्मान के प्रेरणा स्रोत रहे। इसीलिए 'प्रभुत्ववादियों और उनके संगी-साथी' हर बार बाबा साहेब और उनके बनाये संविधान के अपमान-तिरस्कार की साज़िश रचते रहते हैं जिससे कि पीडीए समाज मानसिक रूप से हतोत्साहित हो जाए और अपने अधिकार के लिए कोई आंदोलन न कर पाये। जब कभी ये बात समझकर पीडीए समाज आक्रोशित होता है, तो सत्ताकामी ये 'प्रभुत्ववादी और उनके संगी-साथी' दिखावटी माफ़ी का नाटक भी रचते हैं।

अपमान की इस प्रथा को तोड़ने के लिए अब पीडीए समाज के हर युवक, युवती, महिला, पुरुष ने ये ठान लिया है कि वे सामाजिक एकजुटता से राजनीतिक शक्ति प्राप्त करके 'अपनी सरकार' बनाएंगे और बाबासाहेब और उनके संविधान को अपमानित और ख़ारिज करनेवालों को हमेशा के लिए सत्ता से हटा देंगे। और जो 'प्रभुत्ववादी और उनके संगी-साथी' संविधान की समीक्षा के नाम पर आरक्षण को हटाने मतलब नौकरी में आरक्षण का हक़ मारने का बार-बार षड्यंत्र रचते हैं, उन्हें ही हटा देंगे। उसके बाद ही जाति जनगणना हो सकेगी और पीडीए समाज को उनकी गिनती के हिसाब से उनका हक़ और समाज में उनकी भागीदारी के अनुपात में

गांव-गांव PDA चर्चा करेगी सपा

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर उत्तर प्रदेश के सभी विधानसभा क्षेत्रों के गांव, शहर व कस्बों में 27 जनवरी 2025 से सेक्टरवार PDA चर्चा का कार्यक्रम शुरू होगा। पीडीए चर्चा के दौरान संविधान को बचाने तथा बाबा साहब के विचारों को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। पीडीए चर्चा में समाजवादी पार्टी के सभी जनप्रतिनिधि, संगठन के पदाधिकारी सक्रिय रूप से शामिल होंगे।

पीडीए चर्चा कार्यक्रमों में मतदाताओं को जागरुक करने के साथ सामाजिक न्याय, आरक्षण, बेरोजगारी, महंगाई, जातीय जनगणना तथा स्थानीय मुद्दों पर चर्चा होगी। चर्चा के दौरान पीडीए समाज को अधिकार तथा भागीदारी से अवगत कराकर उन्हें और ताकत से एकजुट किया जाएगा।

केंद्रीय गृहमंत्री द्वारा बाबा साहब पर की गई अपमानजनक टिप्पणी के विरोध में श्री अखिलेश यादव ने बाबा साहब के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए पीडीए चर्चा कार्यक्रम की घोषणा की है।

27 जनवरी से शुरू होने वाले पीडीए चर्चा कार्यक्रम में आमजन को बताया जाएगा कि बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर ने भारत का संविधान बनाकर शोषणात्मक-नकारात्मक प्रभुत्ववादी सोच पर पाबंदी लगाई। ये प्रभुत्ववादी हमेशा से बाबा साहब के विरोधी रहे हैं।

सही हिस्सा मिल पाएगा। धन का सही वितरण भी तभी हो पायेगा, हर हाथ में पैसा आएगा, हर कोई सम्मान के साथ सिर उठाकर जी पाएगा और अपने जीवन में ख़ुशियां और खुशहाली को महसूस कर पाएगा। सदियों से पीडीए समाज के जिन चेहरों पर अपमान, उत्पीड़न, दुःख और दर्द रहा है; उन चेहरों पर उज्ज्वल भविष्य की मुस्कान आएगी, और फिर उनके घर परिवार बच्चों के लिए सम्मान से जीने की नयी राह खुल जाएगी।

तो आइए मिलकर देश का संविधान और बाबासाहेब का मान व आरक्षण बचाएं और अपने सुनहरे, नये भविष्य के लिए एकजुट हो जाएं।

आपका अखिलेश

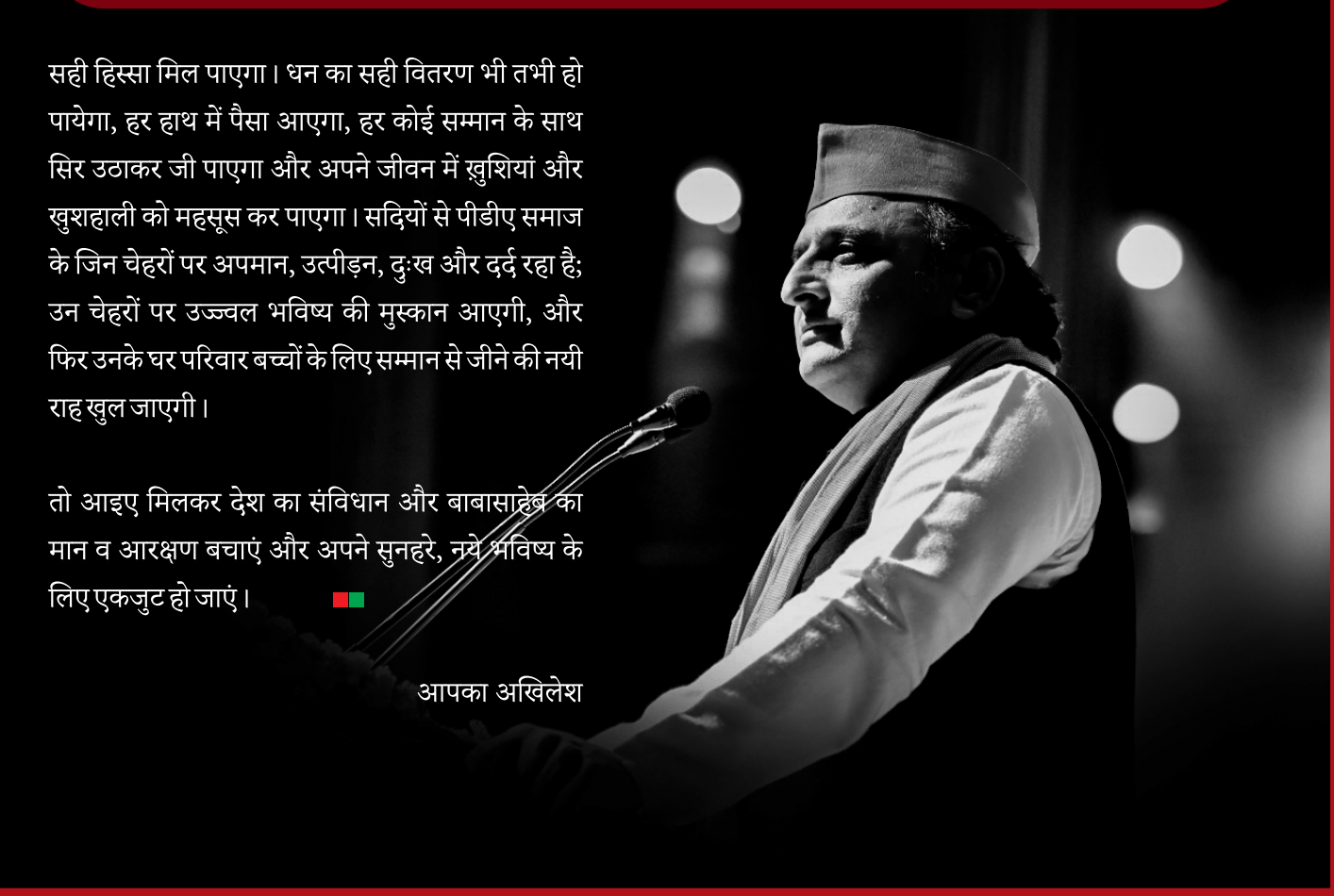

सपा सांसदों का संसद भवन तक मार्च

बुलेटिन ब्यूरो

बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर पर केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा संसद में की गई अपमानजनक टिप्पणी के विरोध में समाजवादी पार्टी ने कड़ा प्रतिवाद किया है। समाजवादी पार्टी के सांसदों ने 20 दिसंबर को नई दिल्ली में विरोध स्वरूप विजय चौक से संसद भवन तक मार्च निकालकर विरोध प्रदर्शन किया। समाजवादी सांसदों ने मांग की कि अपमानजनक टिप्पणी के लिए गृहमंत्री देश से माफी मांगें।

बाबा साहब पर टिप्पणी से आक्रोशित समाजवादी पार्टी के सांसदों श्री अवधेश प्रसाद, श्रीमती डिंपल यादव, श्रीमती जया बच्चन, धर्मेंद्र यादव, आदित्य यादव, मोहिबुल्लाह, रामभुआल निषाद, नरेश उत्तम, अक्षय यादव, जियाउर्रहमान बर्क, आनंद भदौरिया, श्रीमती रूचि वीरा, राजीव राय, हरेंद्र सिंह मलिक, देवेश शाक्य, उत्कर्ष वर्मा मधुर, नीरज मौर्य, डा शिवपाल सिंह पटेल, श्रीमती कृष्णा देवी शिवशंकर पटेल, अजेंद्र सिंह लोधी, नारायण दास अहिरवार, जितेंद्र सिंह दोहरे, रामशिरोमणि वर्मा, पुष्पेंद्र सरोज, लक्ष्मीकांत पप्पू निषाद, दरोगा प्रसाद सरोज, प्रिया सरोज, सनातन पांडेय, वीरेंद्र सिंह, रमाशंकर राजभर, बाबू सिंह कुशवाहा, अफजल अंसारी, रामप्रसाद चौधरी, आरके चौधरी आदि ने बाबा साहब का चित्र लेकर नारे लगाते हुए विजय चौक से संसद भवन तक लाल टोपी पहनकर पैदल मार्च किया और संसद भवन पर समाजवादी पार्टी संसदीय दल के नेता व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में जोरदार विरोध प्रदर्शन किया।

विरोध प्रदर्शन के दौरान संसद परिसर में पत्रकारों से बातचीत करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व कन्नौज लोकसभा क्षेत्र से सांसद श्री अखिलेश यादव ने कहा कि चर्चा के दौरान गृहमंत्री का जो भाव था वह बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर का अपमान है। बाबा साहब पर की गई टिप्पणी

के लिए गृहमंत्री को माफी मांगनी चाहिए। उन्हें सभी सांसदों की मांग माननी चाहिए।

उन्होंने कहा कि बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी हम सभी लोगों, पिछड़ों, दलितों, गरीबों, शोषितों, वंचितों के लिए पूज्यनीय हैं। बाबा साहब के लिए इस तरह की भाषा का प्रयोग निंदनीय है। गृह मंत्री जी को अपने शब्द वापस लेने चाहिए।

बाबा साहब पर टिप्पणी के खिलाफ संसद भवन पर विरोध प्रदर्शन के बाद भी समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव लगातार मुखर रहे। 24 दिसंबर और 31 दिसंबर को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय, लखनऊ में एकत्र कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि देश की एकता, अखंडता, भाईचारे, सामाजिक न्याय और खुशहाली के लिए बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर के विचारों और उनके बताए रास्ते

पर चलना होगा। बाबा साहब ने संविधान बनाकर गरीबों, वंचितों, पिछड़ों, दलितों, अल्पसंख्यकों आदिवासियों और महिलाओं को अधिकार और सम्मान दिलाया। बाबा साहब का संविधान PDA की ताकत और संजीवनी है।

उन्होंने कहा कि भाजपा और उसके सहयोगी संगठनों की मंशा बाबा साहब के संविधान को बदलने की है। बाबा साहब और उनके बनाए संविधान का भाजपा सम्मान नहीं करती है। भाजपा कभी भी बाबा साहब को स्वीकार नहीं कर सकती है। भाजपा जितना ताकतवर होगी संविधान पर उतना बड़ा हमला करेगी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी बाबा साहब के संविधान और लोकतंत्र को बचाने की लड़ाई लड़ रही है। समाजवादी पार्टी संविधान और लोकतंत्र पर होने वाले हर हमले का मुकाबला करेगी और संविधान और लोकतंत्र विरोधी ताकतों को परास्त करेगी।

श्री यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी देश की इकलौती पार्टी है जिसके नाम में वही समाजवाद हैं जो हमारे संविधान की प्रस्तावना में है। भाजपा के षडयंत्र और साजिश से लोगों को सावधान करना है। 2027 में सरकार बनाने के लिए कार्यकर्ताओं को दिन-रात एक करके काम करना है। लोगों को बताना है कि दस साल की सरकार में भाजपा ने स्वास्थ्य, शिक्षा व्यवस्था बर्बाद कर दिया। कानून व्यवस्था खराब कर दी। अन्याय, अत्याचार बहुत बढ़ गया। भाजपा सरकार के संरक्षण में गरीबों की जमीनों पर दबंग कब्जा कर रहे हैं। महंगाई के कारण लोग और गरीब हो रहे हैं। देश में 82 करोड़ लोग सरकारी राशन पर जिन्दा रहने को मजबूर हैं।

बाबा साहब के मुद्दे पर सपा का राज्यव्यापी प्रदर्शन

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर पार्टी के सांसदों, विधायकों, जिलाध्यक्षों, पदाधिकारियों ने संसद में बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर पर केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह द्वारा की गई अपमानजनक टिप्पणी के विरोध में 22 दिसंबर को उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड में विरोध प्रदर्शन किया। कई जिलों में पुलिस ने विरोध प्रदर्शन कर रहे समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं को रोकने की कोशिश की और कई जिलों में पार्टी नेताओं व कार्यकर्ताओं को हाउस अरेस्ट भी कर लिया गया बावजूद इसके पार्टी कार्यकर्ता बाबा साहब के सम्मान के लिए सड़क पर उतरे।

समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं के विरोध प्रदर्शन के दौरान पुलिस से झड़प भी हुई। कार्यकर्ताओं पर लाठियां बरसाई गईं। पुलिस ने पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ अभद्रता भी की। विरोध प्रदर्शन के दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं ने गृहमंत्री का पुतला भी फूंका। समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिया कि बाबा साहब के सम्मान पर किसी भी सूरत में आंच नहीं आने देंगे। सभी जिलों में जिलाधिकारियों के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में गृह मंत्री श्री अमित शाह से माफी मांगने और उनके इस्तीफे की मांग की गई है।

कन्नौज में पूर्व विधायक अरविन्द यादव, जिलाध्यक्ष कलीम खान, इटावा में सांसद जितेन्द्र सिंह दोहरे, सांसद एटा देवेन्द्र शाक्य, प्रदेश सचिव गोपाल यादव, जिलाध्यक्ष प्रदीप शाक्य बब्लू, मैनपुरी में पूर्व मंत्री एवं जिलाध्यक्ष आलोक कुमार शाक्य, एमएलसी मुकुल यादव, विधायक इं ब्रिजेश कठेरिया आदि ने, फिरोजाबाद में जिलाध्यक्ष शिवराज सिंह यादव आदि, बदायूं में जिलाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक आशीष यादव आदि ने, झांसी में जिलाध्यक्ष ब्रजेन्द्र सिंह भोजला आदि ने ज्ञापन सौंपा।

आगरा में राज्यसभा सांसद रामजीलाल सुमन एवं जिलाध्यक्ष कृष्ण वर्मा के साथ हजारों कार्यकर्ताओं ने सुभाष पार्क से पैदल मार्च कर ज्ञापन दिया। आगरा बल्केश्वर में कुलदीप वाल्मीकि के नेतृत्व में प्रदर्शन कर रहे कार्यकर्ताओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

वाराणसी में महानगर अध्यक्ष दिलीप डे, मनोज राय धूपचंडी, महिला सभा की प्रदेश अध्यक्ष रीबू श्रीवास्तव आदि ने, अंबेडकरनगर में सांसद एवं राष्ट्रीय महासचिव सर्वश्री लालजी वर्मा, राम अचल राजभर व जिलाध्यक्ष जंग बहादुर यादव आदि ने बाबा साहब की प्रतिमा के समक्ष धरना देकर ज्ञापन दिया।

मिर्जापुर में समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष देवी प्रसाद चौधरी आदि ने सुल्तानपुर में पूर्व विधायक संतोष पाण्डेय व जिलाध्यक्ष रघुवीर यादव आदि ने, फर्रुखाबाद में जिलाध्यक्ष चन्द्रपाल यादव आदि ने बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर की मूर्ति पर माल्यार्पण के बाद कलक्ट्रेट पर धरना दिया। मुजफ्फरनगर में जिलाध्यक्ष जिया चौधरी आदि ने, कुशीनगर में जिलाध्यक्ष व्यास यादव आदि ने मार्च निकाल कर ज्ञापन सौंपा।

अयोध्या में कार्यकर्ता सरकार व गृहमंत्री विरोधी नारे लगाते हुए कचहरी की तरफ बढ़े। पुलिस ने कचहरी गेट को बंद कर दिया जिसपर वहीं सरकार विरोधी नारे लगाए गए। बलरामपुर मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन और पैदल मार्च कर कलेक्ट्रेट में एडीएम को ज्ञापन सौंपा।

अलीगढ़ में जिलाध्यक्ष लक्ष्मी धनगर आदि ने मार्च निकाल कर धरना प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा। जौनपुर में पूर्व मंत्री शैलेन्द्र यादव ललई, सांसद प्रिया सरोज, विधायक तूफानी सरोज व जिलाध्यक्ष राकेश मौर्य आदि ने धरना देकर ज्ञापन सौंपा। प्रयागराज में विधायक विजमा यादव, एमएलसी डॉ मान सिंह, पूर्व सांसद धर्मराज पटेल, विधायक संदीप पटेल आदि ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर ज्ञापन सौंपा।

चंदौली में जिलाध्यक्ष सत्यनारायण राजभर, विधायक प्रभु नारायण सिंह यादव आदि के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन किया। शामली में जिलाध्यक्ष अशोक चौधरी आदि के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन किया गया। रायबरेली में जिलाध्यक्ष इं. वीरेन्द्र यादव, विधायक श्याम सुंदर भारती, विधायक राहुल लोधी आदि के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया।

सहारनपुर में मार्च निकाल कर जिलाध्यक्ष चौधरी अब्दुल वाहिद आदि ने, बिजनौर में स्वामी ओमवेश, विधायक नूरपुर रामअवतार सैनी, विधायक नजीबाबाद तस्लीम अहमद विधायक चांदपुर, जिलाध्यक्ष शेख जाकिर हुसैन आदि ने जबकि श्रावस्ती में विधायक भिनगा श्रीमती इन्द्राणी वर्मा, जिलाध्यक्ष सर्वजीत यादव आदि ने विरोध प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा। गोरखपुर में जिलाध्यक्ष बृजेश कुमार गौतम आदि ने जुलूस निकाला, ग्रेटर नोएडा में जिलाध्यक्ष सुधीर भाटी आदि ने विरोध प्रदर्शन किया। बलिया में संग्राम सिंह यादव जिलाध्यक्ष एवं विधायक फेफना, मिठाई लाल भारती आदि ने, संभल में गुन्नौर विधायक राम खिलाड़ी यादव, जिलाध्यक्ष असगर अली अंसारी आदि ने, शाहजहांपुर में जिलाध्यक्ष तनवीर खान के नेतृत्व में जुलूस निकालकर प्रदर्शन किया।

बहराइच में पूर्व कैबिनेट मंत्री यासिर शाह, जिलाध्यक्ष राम हर्ष यादव आदि ने, महाराजगंज में जिलाध्यक्ष आदि ने ने प्रदर्शन किया। पीलीभीत में विरोध प्रदर्शन कर रहे पार्टी कार्यकर्ताओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

हमीरपुर में जिलाध्यक्ष इदरीश खान के साथ माया बाल्मीकि सांसद प्रतिनिधि व कानपुर

ग्रामीण में पूर्व सांसद राजाराम पाल, जिलाध्यक्ष मुनीन्द्र शुक्ला आदि ने मार्च निकाल कर प्रदर्शन किया।

मेरठ में विधायक अतुल प्रधान, जिलाध्यक्ष विपिन चौधरी ने विरोध प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा। एटा में अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ द्वारा बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर और दो घंटे मौन रखकर विरोध दर्ज कराया।

मऊ व बहराइच में विरोध प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा गया। बुलंदशहर में जिलाध्यक्ष मतलूब अली, भदोही में जिलाध्यक्ष प्रदीप यादव, पूर्व मंत्री रामकिशोर बिन्द आदि ने विरोध प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा।

लखनऊ में जिला व महानगर के कार्यकर्ताओं ने सांसद आरके चौधरी, डॉ राजपाल कश्यप, जिलाध्यक्ष जयसिंह जयंत के नेतृत्व में कलक्ट्रेट पहुंचकर ज्ञापन सौंपा। विरोध प्रदर्शन करने वालों में विधायक सर्वश्री रविदास मेहरोत्रा, अरमान खान, महानगर अध्यक्ष फाकिर सिद्दीकी, राष्ट्रीय अध्यक्ष महिला सभा जूही सिंह आदि शामिल रहे। लखनऊ उच्च न्यायालय इलाहाबाद के अधिवक्ताओं ने प्रदर्शन कर गृहमंत्री से माफी मांगने की मांग की।

उत्तराखंड राज्य में भी जिलाधिकारियों के माध्यम से ज्ञापन सौंपकर श्री अमित शाह से माफी मांगने और इस्तीफा देने की मांग की गई। देहरादून में जिलाधिकारी कार्यालय पर भाजपा सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया गया। विरोध प्रदर्शन में राष्ट्रीय सचिव डॉ एस एन सचान, देहरादून के जिलाध्यक्ष गुलफाम अली आदि शामिल रहे।

सपा विधायकों ने विधानमंडल के दोनों सदनों में सत्ता पक्ष को घेरा

बुलेटिन ब्यूरो

बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर के खिलाफ केंद्रीय गृहमंत्री द्वारा की गई टिप्पणी के विरोध में समाजवादी पार्टी के विधायकों ने 19 दिसंबर को उत्तर प्रदेश विधानसभा व विधान परिषद में जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। समाजवादी पार्टी के विधायकों की मांग थी कि गृहमंत्री माफी मांगें। समाजवादी पार्टी का विरोध प्रदर्शन इतना जबरदस्त था कि दोनों सदनों की कार्यवाही समय से पहले ही अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी गई।

19 दिसंबर को पार्टी के राज्य मुख्यालय पर श्री अखिलेश यादव ने पार्टी के विधायकों व विधान परिषद के सदस्यों के साथ बैठक की और उन्हें स्पष्ट तौर पर निर्देश दिया कि पीडीए को संविधान रूपी ताकत देने वाले बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर का अपमान समाजवादी पार्टी बर्दाश्त नहीं करेगी। गृहमंत्री को बाबा साहब पर की गई टिप्पणी वापस लेनी होगी। इस बैठक के बाद विधानमंडल दल के सदस्य बाबा साहब का चित्र लेकर विधानसभा व विधान परिषद में पहुंचे और जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। विपक्षी पाले के दूसरे दलों ने भी समाजवादी पार्टी के विरोध प्रदर्शन को अपना समर्थन दिया।

समाजवादी पार्टी के सदस्यों ने वेल में आकर गृहमंत्री के खिलाफ नारेबाजी की। सरकार के पास समाजवादी पार्टी के सदस्यों द्वारा उठाए गए मुद्दे का कोई जवाब ही नहीं था। नतीजतन 19 दिसंबर को ही दोनों सदनों के सत्र को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करना पड़ा।

डॉ अंबेडकर का सोशलिस्टों से तालमेल !

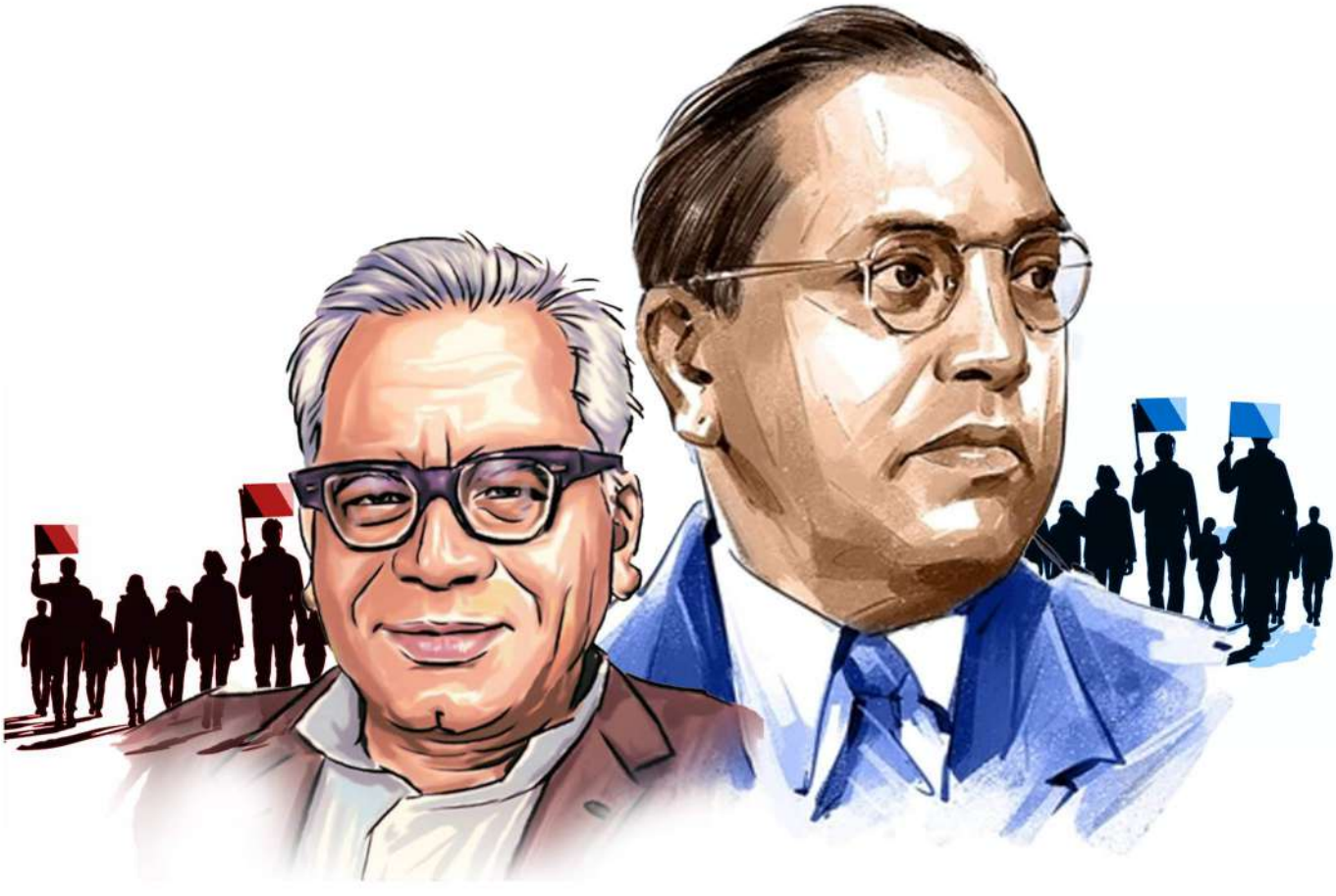

प्रोफेसर राजकुमार जैन

आजकल मुल्क की सियासत में बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर को लेकर रस्साकशी जारी है तथा हर पार्टी, नेता, समूह, संगठन अपने को डॉक्टर अंबेडकर का सबसे बड़ा पैरोकार सिद्ध करने पर जोर आजमाइश कर रहे हैं परंतु डॉक्टर अंबेडकर सोशलिस्टों को अपने सबसे नजदीक मानकर उनके साथ चुनावी समझौता कर चुनाव लड़े तथा बाद में सोशलिस्टों के समर्थन से वे राज्यसभा में भी चुने गए।

आजादी के बाद 1952 में भारत के प्रथम लोकसभा चुनाव मैं कांग्रेस के विरुद्ध संयुक्त रूप से लड़ने के लिए महाराष्ट्र किसान मजदूर दल और शेड्यूल कास्ट फेडरेशन इन दो दलों के नेताओं ने महाराष्ट्र में एक संयुक्त मोर्चा बनाने के बारे में कुछ महीनों से विचार

विमर्श शुरू किया। डॉ अंबेडकर को दिल्ली में इसकी सूचना दी गई।

1951 के प्रथम सप्ताह में नई दिल्ली में शेड्यूल कास्ट फेडरेशन की कार्यकारिणी समिति की बैठक में चुनाव के संबंध में विचार विमर्श हुआ शेड्यूल कास्ट फेडरेशन ने निर्णय लिया कि वे कांग्रेस, हिंदू महासभा या कम्युनिस्टों के साथ बिल्कुल सहयोग नहीं करेंगे परंतु सोशलिस्ट पार्टी के साथ तालमेल होगा।

1952 के प्रथम लोकसभा चुनाव में मुंबई नॉर्थ सेंट्रल संसदीय क्षेत्र से शेड्यूल कास्ट फेडरेशन की ओर से डॉक्टर अंबेडकर तथा सोशलिस्ट पार्टी के अशोक मेहता संयुक्त उम्मीदवार बने। 1952 के चुनाव में संवैधानिक रूप से व्यवस्था थी कि एक लोकसभा क्षेत्र से दो प्रतिनिधियों का चुनाव होता था जिसमें एक पद सुरक्षित तथा दूसरा पद अनारक्षित था। एक ही बैलट पेपर पर दो नाम लिखे होते थे।

18 नवंबर को अंबेडकर मुंबई रहने के लिए आ गए बोरीबंदर मुंबई के स्टेशन पर शेड्यूल कास्ट फेडरेशन और सोशलिस्ट पार्टी ने उनका भव्य स्वागत किया। दूसरे दिन सर कावस जी जहांगीर ऑडिटोरियम में शेड्यूल कास्ट फेडरेशन और सोशलिस्ट पार्टी की ओर से एक संयुक्त सभा हुई। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने मुंबई में कांग्रेस उम्मीदवार के पक्ष में बोलते हुए सोशलिस्ट पार्टी शेड्यूल कास्ट फेडरेशन की एकता को अपवित्र मानकर उसकी निंदा की।

डॉक्टर अंबेडकर और अशोक मेहता दोनों हार गए। अंबेडकर को 123576 तथा अशोक मेहता को139741 वोट मिले, लगभग 25000 वोट से अंबेडकर चुनाव हार गए। चुनाव में हार जाने के बाद दिल्ली

में डॉक्टर अंबेडकर ने कहा, हार के धक्के का मुझ पर कोई खास असर नहीं हुआ। उनका कहना था कि कम्युनिस्ट नेता डांगे के षड्यंत्र के कारण उनकी पराजय हुई।

अपनी पार्टी के एक नेता राज घो भंडारी को चुनाव के परिणाम के बारे में लिखते हुए उन्होंने कहा, चुनाव एक तरह का जुआ है-- फिर भी हम सफलता तक पहुंचे थे, हमें धीरज नहीं छोड़ना चाहिए, हमें हमारे लोगों की उम्मीद पस्त नहीं होने देने चाहिए। समाजवादियों पर उंगली उठाने के लिए कोई जगह नहीं है।

कुछ दिनों बाद अंबेडकर और अशोक मेहता ने मुंबई में हुए लोकसभा चुनाव रद्द किया जाए इस तरह की एक याचिका चुनाव न्याय समिति के समक्ष पेश की, उसमें कहा गया था कि दोहरी मतदाता संघ में एक ही इच्छुक उम्मीदवार को दो वोट देने के बारे में प्रचार होने से उस चुनाव में भ्रष्टाचार हुआ इसलिए चुनाव रद्द किया जाए।

उस याचिका के खिलाफ कम्युनिस्ट उम्मीदवार एस ए डांगे तथा जीते हुए कांग्रेसी उम्मीदवार नारायण राव काजोल कर उसमें प्रतिवादी बन गए। अंबेडकर, अशोक मेहता की याचिका खारिज कर दी गई।

मार्च 1952 में मुंबई विधान परिषद की ओर से 17 सीटों के लिए राज्यसभा सदस्यों का चुनाव होने वाला था, डॉ अंबेडकर राज्यसभा के उम्मीदवार थे सोशलिस्ट पार्टी तथा शेतकरी पार्टी के समर्थन से वे राज्यसभा के सदस्य चुन लिए गए। 1954 में भंडारा महाराष्ट्र संसदीय क्षेत्र में उपचुनाव था, चुनाव में सुरक्षित सीट के लिए शेड्यूल कास्ट फेडरेशन की ओर से डॉ अंबेडकर तथा जनरल सीट पर सोशलिस्ट अशोक मेहता दोबारा संयुक्त उम्मीदवार बनकर चुनाव लड़े। चुनाव में अंबेडकर को132483 वोट मिले तथा केवल 8183 वोटों से डॉ अंबेडकर कांग्रेस उम्मीदवार भाऊराव बोरकर से चुनाव हार गए परंतु अशोक मेहता चुनाव जीत गए।

लोकतंत्र में 'एक' शब्द ही अलोकतांत्रिक

- अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने तर्कपूर्ण तरीके से यह समझाया है कि 'एक देश-एक चुनाव' देश के लोकतंत्र को किस तरह नुकसान पहुंचाने वाला है। श्री अखिलेश यादव ने 17 दिसंबर को सोशल मीडिया के जरिये विस्तार से इस मुद्दे पर अपनी बात रखी।

उन्होंने कहा कि यह फ़ैसला सच्चे लोकतंत्र के लिए घातक साबित होगा। ये देश के संघीय ढांचे पर भी एक बड़ी चोट करेगा। इससे क्षेत्रीय मुद्दों का महत्व ख़त्म हो जाएगा और जनता उन बड़े दिखावटी मुद्दों के मायाजाल मे फंसकर रह जाएगी जिन तक उनकी पहुंच ही नहीं है।

उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक संदर्भों में 'एक' शब्द ही अलोकतांत्रिक है। लोकतंत्र बहुलता का पक्षधर होता है। 'एक' की भावना में दूसरे के लिए स्थान नहीं होता जिससे सामाजिक सहनशीलता का हनन होता है। व्यक्तिगत स्तर पर 'एक' का भाव, अहंकार को जन्म देता है और सत्ता को तानाशाही बना देता है।

हमारे देश में जब राज्य बनाए गये तो ये माना गया कि एक तरह की भौगोलिक, भाषाई व उप सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के क्षेत्रों को 'राज्य' की एक इकाई के रूप में चिन्हित किया जाए। इसके पीछे की सोच ये थी कि ऐसे क्षेत्रों की समस्याएं और अपेक्षाएं एक सी होती हैं इसीलिए इन्हें एक मानकर नीचे-से-ऊपर की ओर ग्राम, विधानसभा, लोकसभा और राज्यसभा के स्तर तक जन प्रतिनिधि बनाएं जाएं। इसके मूल में स्थानीय से लेकर

क्षेत्रीय सरोकार सबसे ऊपर थे। 'एक देश-एक चुनाव' का विचार इस लोकतांत्रिक व्यवस्था को ही पलटने का षड्यंत्र है।

श्री अखिलेश यादव के अनुसार एक तरह से ये संविधान को ख़त्म करने का एक और षड्यंत्र भी है। इससे राज्यों का महत्व भी घटेगा और राज्यसभा का भी। कल को ये भाजपा वाले राज्यसभा को भी भंग करने की मांग करेंगे और अपनी तानाशाही लाने के लिए नया नारा देंगे 'एक देश-एक सभा' जबकि सच्चाई ये है कि हमारे यहां राज्य को मूल मानते हुए ही 'राज्यसभा' की निरंतरता का संवैधानिक प्रावधान है। लोकसभा तो पांच वर्ष तक की समयावधि के लिए होती है।

ऐसा होने से लोकतंत्र की जगह एकतंत्रीय व्यवस्था जन्म लेगी, जिससे देश तानाशाही की ओर जाएगा। दिखावटी चुनाव केवल सत्ता पाने का ज़रिया बनकर रह जाएगा। अगर भाजपाइयों को लगता है कि 'वन नेशन, वन इलेक्शन, अच्छी बात है तो फिर देर किस बात की, केंद्र व सभी राज्यों की सरकारें भंग करके तुरंत चुनाव कराएं। दरअसल ये भी 'नारी शक्ति वंदन' की तरह एक जुमला ही है।

उन्होंने कहा कि ये जुमला भाजपा की दो विरोधाभासी बातों से बना है। जिसमें कथनी-करनी का भेद है। भाजपा वाले एक तरफ़ 'एक देश' की बात तो करते हैं पर देश की एकता को खंडित कर रहे हैं, बिना एकता के 'एक देश' कहना व्यर्थ है; दूसरी तरफ़ ये जब 'एक चुनाव' की बात करते हैं तो उसमें भी विरोधाभास है, दरअसल ये 'एक को चुनने' की बात करते हैं। जो लोकतांत्रिक परंपरा के खिलाफ़ है।

उन्होंने सवाल उठाया कि क्या 'एक देश, एक चुनाव' का मुद्दा महंगाई, बेरोजगारी, बेकारी, बीमारी से बड़ा मुद्दा है जो भाजपाई इसे उठा रहे हैं। दरअसल भाजपा इन बड़े मुद्दों से ध्यान भटका रही है। जनता सब समझ रही है। सच तो ये है कि बीजेपी को तो सोते-जागते सिर्फ़ चुनाव दिखाई देता है और ये सोचते हैं कि किस तिकड़म से परिणाम इनके पक्ष में दिखाई दे। ये हर बार जुगाड़ से चुनाव जीतते हैं। इसीलिए चाहते हैं कि एक साथ जुगाड़ करें और सत्ता में बने रहें।

उन्होंने कहा कि अगर 'वन नेशन, वन इलेक्शन' सिद्धांत के रूप में है तो स्पष्ट किया जाए कि प्रधान से लेकर प्रधानमंत्री तक के

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि जनता का सुझाव है कि भाजपा सबसे पहले अपनी पार्टी के अंदर ज़िले-नगर, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर इस तरह के चुनावों को एक साथ करके दिखाए फिर पूरे देश की बात करे

सभी ग्राम, टाउन, नगर नि कायों के चुनाव भी साथ ही होंगे या फिर त्योहारों और मौसम के बहाने सरकार की हार-जीत की व्यवस्था बनाने के लिए अपनी सुविधानुसार?भाजपा जब बीच में किसी राज्य की चयनित सरकार गिरवाएगी तो क्या पूरे देश के चुनाव फिर से होंगे? किसी राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू होने पर क्या जनता की चुनी सरकार को वापस आने के लिए अगले आम चुनावों तक का इंतज़ार करना पड़ेगा या फिर पूरे देश में फिर से चुनाव होगा?

'एक देश-एक चुनाव' को लागू करने के लिए जो संवैधानिक संशोधन करने होंगे उनकी कोई समय सीमा निर्धारित की गयी है या ये भी महिला आरक्षण की तरह भविष्य के ठंडे बस्ते में डालने के लिए उछाला गया एक जुमला भर है?

उन्होंने शंका जाहिर की है कि कहीं 'एक देश-एक चुनाव' की ये योजना चुनावों का निजीकरण करके परिणाम बदलने की साज़िश तो नहीं है? ऐसी आशंका इसलिए जन्म ले रही है क्योंकि कल को सरकार ये कहेगी कि इतने बड़े स्तर पर चुनाव कराने के लिए उसके पास मानवीय व अन्य ज़रूरी संसाधन ही नहीं हैं, इसीलिए हम चुनाव कराने का काम भी (अपने लोगों को) ठेके पर दे रहे हैं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि जनता का सुझाव है कि भाजपा सबसे पहले अपनी पार्टी के अंदर ज़िले-नगर, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर इस तरह के चुनावों को एक साथ करके दिखाए फिर पूरे देश की बात करे।

श्री अखिलेश यादव ने आशा जतायी है कि देश-प्रदेश की जागरुक जनता, पत्रकार बंधु और लोकतंत्र के पक्षधर सभी दलों के कार्यकर्ता, पदाधिकारी व नेतागण ये बातें स्थानीय स्तर पर अपनी-अपनी भाषा-बोली में हर गांव, गली, मोहल्लों में जाकर आम जनता को बताएंगे और उन्हें समझाएंगे कि 'एक देश, एक चुनाव' किस तरह पहले तानाशाही को जन्म देगा और फिर उनके हक़ और अधिकार को मारेगा, आरक्षण को ख़त्म करेगा और फिर एक दिन संविधान को भी और आखिर में चुनाव को भी।

लोकतंत्र के लिए विध्वंसक है 'वन नेशन वन इलेक्शन'

प्रेम कुमार
वरिष्ठ पत्रकार

'एक सूरज एक दुनिया' की तर्ज पर क्या हम ऐसा नारा दे सकते हैं 'एक दुनिया एक शासन' या फिर 'एक दुनिया एक देश'? दूसरा विश्वयुद्ध हिटलर, मुसोलनी और तोजो ने मिलकर ऐसा ही सपना देखा था 'तीन शासक तीन देश'। मगर, हश्र क्या हुआ? तीनों ही मर मिटे।

भारत में 'एक देश एक टैक्स' भी यह कहकर आधी रात को लाया गया कि यह 'दूसरी आजादी' का एलान है। मगर, हुआ क्या?

अमीर-गरीब सब एक समान टैक्सपेयर हो गये। एक ब्रेड के लिए जो टैक्स अंबानी-अडानी देते हैं वही टैक्स भीख के पैसे से ब्रेड खरीद रहे भिखारी भी देते हैं। मोदी सरकार इस बात का श्रेय ले सकती है कि उन्होंने अंबानी-अडानी के बराबर भिखारियों को भी ला खड़ा कर दिया है। मगर, दूसरा नजरिया ये है कि भिखमंगा बनकर उद्योगपतियों से टैक्स चोरी करायी जा रही है। एक देश एक टैक्स का नारा खोखला है। स्टेट टैक्स, सेंट्रल टैक्स, चार तरह के स्लैब, सर्विस टैक्स सब कुछ शामिल होता है जब आप परचेज करते हैं। फिर 'एक देश एक टैक्स' आया ही क्यों? सिद्धांत एक समानता एकरूपता का और व्यवहार में गरीबों से लूट अमीरों को छूट।

सहूलियत और खर्च बचाने के लिए नहीं होते हैं चुनाव

'एक देश एक चुनाव' को सहूलियत, बारहों महीने इलेक्शन मोड में रहने से देश को बचाना, चुनाव खर्च में कमी जैसी बातों से जोड़ा गया है। ये सारे मकसद आसानी से पूरे हो जाएं जब आप चुनाव कराना ही बंद कर दें! क्या देश में चुनाव इसलिए होते हैं कि लोगों को मुश्किल में डाला जाए, कि साल भर लोग चुनाव मोड में रहें या फिर चुनाव पर बेतहाशा खर्च किए जाएं?

त्याग और कुर्बानी से हासिल आजादी के बाद जनता की सरकार बनाने की चुनौती को पूरा करने के लिए वर्तमान चुनाव प्रणाली बनी। तब देशभर में एक साथ चुनाव हुए लेकिन ये 'एक देश एक चुनाव' नहीं थे। अगर ये एक 'देश एक चुनाव' होते तो देशभर में 111 बार प्रदेशों में राष्ट्रपति शासन लागू नहीं होते और न ही इतने बार मध्यावधि चुनाव होते। सच है कि स्वाभाविक तरीके से देश और प्रदेशों के चुनाव अलग-अलग होते चले गये। यह कभी चिंता की बात नहीं रही।

आखिरी एक साल में चुनाव हों तो खर्च पांच गुणा ज्यादा!

'एक देश एक चुनाव' का जो प्रारूप संसद में पेश किया गया और जिसे संसदीय समिति को भेजा गया है वह बहुत ख़तरनाक है। अगर किसी विधानसभा में चार साल बाद ऐसी स्थिति पैदा होती है कि वहां चुनाव कराने पड़े तो उस विधानसभा का कार्यकाल महज एक साल का ही होगा। इसका मतलब यह हुआ कि पांच साल के लिए चुनाव कराने में जितना खर्च आता है उतना खर्च एक साल तक चलने वाली विधानसभा के लिए चुनाव पर होगा। यह तो चुनाव खर्च में बचत के विचार से ही उल्टा है। पांच गुणा खर्च सीधे बढ़ जाएगा। जाहिर है कि किसी विधायक या सांसद की मृत्यु होने पर या इस्तीफा दे देने के बाद जो दोबारा चुनाव होंगे उस पर भी बाकी बचे कार्यकाल के मुताबिक ही खर्च होंगे यानी चुनाव महंगा हो जाएगा।

ताकतवर हो जाएगा सरकार की मुट्ठी में रहने वाला चुनाव आयोग

'एक देश एक चुनाव' के जरिए राष्ट्रपति और चुनाव आयोग को शक्तिशाली बनाया जा रहा है। चूंकि मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति एक ऐसा पैनल करता है जिसमें प्रधानमंत्री और उनकी पसंद के एक व्यक्ति के अलावा विपक्ष का

फोटो स्रोत : गूगल

फोटो स्रोत : गूगल

की मुट्ठी में रहता है। राष्ट्रपति भी कार्यपालिका प्रमुख के आग्रह को इनकार करने की सीमा से बंधे होते हैं। इस लिहाज से पूरी ताकत केंद्र सरकार के पास आ जाती है। स्वाभाविक रूप से चुनाव होने की बनती स्थिति को रोकना ही अलोकतांत्रिक है। चुनाव कराना लोकतंत्र के लिए जरूरी है कि चुनावों को होने देने से रोकना?

महंगा नहीं है 1400 रुपये प्रति वोट खर्च

एक वोट पर अगर चुनाव खर्च 1400 रुपये के करीब पहुंच चुका है तो इसमें विचलित होने जैसी बात क्या है? क्या एक-एक वोट पर हजार से ढाई हजार रुपये नकद बांटने का सिलसिला चुनाव के समय में शुरू नहीं हो चुका है? पांच साल तक अपनी सरकार की गारंटी के लिए इस रकम से कई गुणा ज्यादा रकम खर्च नहीं कर दी जाएगी- इसकी क्या संभावना है? सच तो ये है कि वन टाइम इन्वेस्टमेंट जो पार्टी उद्योगपतियों से करा लेगी वह पांच साल के लिए अपनी सत्ता सुरक्षित कर लेगी। इनवेस्टमेंट तो उद्योगपति ही करेंगे। इसका मतलब साफ है कि वन नेशन वन इलेक्शन के जरिए पूरी चुनाव प्रणाली को उद्योगपतियों के हाथों में सौंपे जाने की तैयारी चल रही है। भ्रष्ट प्रैक्टिस को वैधानिक बनाने की कोशिश के तौर पर भी इसे देखा जा सकता है।

समझौते के मॉडल विकसित होंगे

'एक देश एक चुनाव' के कारण कई तरह के अनैतिक समझौतों की स्थितियां बनेंगी। चुनाव से पहले कई प्रदेशों में राष्ट्रपति शासन लागू होंगे और एक देश एक चुनाव के नाम पर चुनाव से ठीक पहले के छह महीने या आठ महीने तक क्षेत्रीय दलों के हाथों से सत्ता छीन ली जा सकती है। ऐसा भी संभव है कि राष्ट्रीय स्तर की सियासत में समर्थन करने को बाध्य करने के लिए भी ऐसी स्थिति बनाई जाएगी जिसमें क्षेत्रीय दलों से ब्लैकमेलिंग के आधार पर गठजोड़ किया जा सके।

समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव मानते हैं कि एक देश एक चुनाव का फैसला सच्चे लोकतंत्र के लिए घातक साबित होगा। ये देश के एक संघीय ढांचे पर भी एक बड़ी चोट करेगा। इससे क्षेत्रीय मुद्दों का महत्व खत्म हो जाएगा और जनता उन बड़े दिखावटी मुद्दों के मायाजाल में फंसकर रह जाएगी जिन तक उनकी पहुंच ही नहीं है। अखिलेश यादव की चिंता को इस बात से भी

समझा जा सकता है कि प्रस्तावित बिल में प्रावधान है कि राष्ट्रपति चुनाव आयोग से परामर्श ले सकते हैं। चुनाव आयोग को शक्तिशाली बनाना वास्तव में लोकतांत्रिक प्रणाली पर कब्जा करने की कोशिश अधिक लगती है।

सरकार बना भर लेना लोकतंत्र नहीं

हमारे देश में जो चुनाव प्रणाली है उससे सरकार चुनी जाती है। चुनाव प्रणाली लोकतांत्रिक, स्वतंत्र, निरपेक्ष और तटस्थ है इसलिए इस चुनाव से बनने वाली सरकार का चरित्र भी वैसा ही होता है। देश में लोकतंत्र सिर्फ इसलिए जिन्दा नहीं है कि चुनाव से सरकार बनती है बल्कि यह इसलिए जिन्दा है कि बनने वाली सरकार लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप आचरण करती है और इन मूल्यों को बचाए रखती है। सरकार तो उत्तर कोरिया में भी बनती है रूस और चीन मे भी बनती है। लेकिन, क्या वे सरकारें भारत में लोकतांत्रिक रूप से चुनी जाती रही सरकारों के मुकाबले लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध हैं?

क्षेत्रीय मुद्दों की बलि चढ़ जाएगी

हर चुनाव की अपनी विशेषता होती है। यहां तक कि आम चुनाव भी पिछले चुनावों से बिल्कुल अलग होते हैं। लोकसभा और विधानसभा चुनावों की प्रकृति भी अलग होती है। अब पहले जैसी बात भी नहीं रही कि लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ होने पर ओडिशा जैसे प्रदेश दो अलग-अलग राजनीतिक फैसले दिया करते थे। स्थानीय स्तर पर बीजेडी सरकार और केंद्रीय स्तर पर बीजेपी सरकार। ख़तरा इस बात का है कि क्षेत्रीय मुद्दे 'एक देश एक चुनाव' की बलि चढ़ जाएंगे और जनता राष्ट्रीय स्तर के मुद्दों पर क्षेत्रीय सरकार भी चुन लेने की स्थिति में फंस जाएंगे।

हमारे देश में प्रदेशों का जन्म भाषा, संस्कृति, परंपरा के आधार पर हुआ है। ये प्रदेश अगर इन आधारों पर नहीं होते तो शायद ये प्रदेश भी प्रदेश नंबर वन, टू, थ्री की तर्ज पर 29 स्टेट होते। संविधान में समवर्ती सूची है जहां प्रदेशों के लिए कानून बनाने की लिखित व्यवस्था है। 'एक देश एक चुनाव' से प्रदेशों की अहमियत घटेगी। मुख्यमंत्री को अपनी विधानसभा भंग करने तक का अधिकार नहीं होगा। सारे फैसले राष्ट्रपति और चुनाव आयोग की राह से केंद्र सरकार के पास हो जाएंगे। यही कारण है कि 'एक देश एक नेशन' को लोकतांत्रिक नजरिए से विध्वंसक माना जा रहा है।

फोटो स्रोत : गूगल

अखिलेश की एक झलक पाने की ललक

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव 18 दिसंबर को सहारनपुर पहुंचे तो उनकी एक झलक पाने की ललक में कार्यकर्ताओं और आमजनों का हुजूम उमड़ पड़ा। हर कोई श्री अखिलेश यादव को करीब से देखना चाहता था और उनसे हाथ मिलाने की इच्छा लेकर आया था।

सहृदय श्री अखिलेश यादव ने जितना संभव हो सका लोगों ने आत्मीय मुलाकात की और उनसे बातें कीं। नौजवान उनके साथ फोटो खिंचवाने की होड़ में लगे थे। श्री अखिलेश यादव ने उन्हें भी निराश नहीं होने दिया।

एक कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंचे श्री अखिलेश यादव का सहारनपुर निवासियों ने भव्य तरीके से स्वागत किया। श्री अखिलेश यादव के समर्थन में जमकर नारे लगाए गए। नौजवानों ने 2027 में समाजवादी सरकार बनाने के लिए जीजान से जुट जाने का भरोसा दिया तो बुजुर्गों ने उन्हें 2027 में समाजवादी सरकार बनाने का आशीर्वाद दिया।

भव्य स्वागत से श्री अखिलेश यादव अभिभूत हो गए। उन्होंने सभी का आभार जताया।

सहारनपुर में पत्रकारों से बातचीत करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा संविधान पर नहीं चलना चाहती है। यह लोकतंत्र पर भरोसा नहीं करती है। भाजपा

नफरत और भेदभाव की राजनीति कर रही है। देश में जगह-जगह खोदने से देश का सौहार्द खो जाएगा। भाजपा और उसकी विचारधारा के लोग देश का भाईचारा खत्म कर रहे हैं। देश में प्लेसेज ऑफ वर्शिप कानून है लेकिन भाजपा कानून और संविधान नहीं मान रही है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा संविधान, लोकतंत्र और विकास विरोधी है। समाजवादी पार्टी भाजपा की नफरत की राजनीति के खिलाफ लड़ रही है। समाजवादी पार्टी उन सबके साथ है जोकि भाजपा को हराने के लिए आगे आएंगे।

श्री यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी किसानों के साथ है। किसानों की मांगों का समर्थन करती है। किसानों की बात प्राथमिकता से मानी जानी चाहिए। भाजपा सरकार में महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार चरम पर है। नौजवानों को नौकरी, रोजगार नहीं मिल रहा है।

हालत यह है कि गरीब बच्चे घर-परिवार गांव, खेत, खलिहान को छोड़कर युद्धग्रस्त देश इजरायल में जाने पर विवश हैं। उन्होंने कहा कि अगर सरकार को इस बात का गर्व है, तो जो बच्चे इजरायल गए हैं उनकी सूची जारी करें और यह भी बताएं कि वहां वे क्या काम कर रहें हैं?

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार में सरकारी अस्पतालों में इलाज नहीं मिल रहा है। स्वास्थ्य सेवाओं को बर्बाद कर दिया है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर का अपमान किया है। भाजपा के लोग बाबा साहब का सम्मान नहीं करते हैं और ये लोग बाबा साहब के बनाएं संविधान को नहीं मानते हैं।

सपा के सवालों पर सरकार निरुत्तर

सदन स्थगित

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश विधानमंडल के दोनों सदनों में समाजवादी पार्टी द्वारा उठाए गए जनहित के तमाम मुद्दों पर भाजपा सरकार निरुत्तर हो गयी। नतीजतन सदन की बैठकों के लिए निर्धारित तारीख से पहले ही शीतकालीन सत्र स्थगित कर दिया गया। दरअसल समाजवादी पार्टी के जनहित से जुड़े तमाम चुभते सवालों से सरकार परेशान हो गई। पहले सरकार ने दबाव बनाने के लिए समाजवादी पार्टी के विधायक अतुल प्रधान को पूरे सत्र के लिए निष्कासित करने का रास्ता निकाला।

इसके बावजूद समाजवादी पार्टी के विधायक न तो दबाव में और न ही सरकार के अड़ियल रवैये के सामने झुके। समाजवादी

पार्टी के विधायक बदतर हो चुकी स्वास्थ्य व कानून व्यवस्था से जुड़े सवालों पर सरकार से जवाब चाहते थे मगर सरकार के पास कोई जवाब नहीं था।

उत्तर प्रदेश विधानसभा व विधान परिषद का शीतकालीन सत्र 16 दिसंबर से 20 दिसंबर तक आहूत था। पहले दिन समाजवादी पार्टी के विधायकों ने जनता के सवालों पर सरकार को घेरा।

सत्तापक्ष के विधायकों ने जनहित के मुद्दों के बजाय दूसरे विषयों पर बात करने की कोशिश की मगर समाजवादी पार्टी के विधायक जनता के मुद्दों पर सरकार को घेरते रहे और उससे जवाब मांगते रहे।

हर तरफ से घिर चुकी सरकार ने मेरठ की सरधना से सपा विधायक अतुल प्रधान को पूरे सत्र के लिए सदन से निष्कासित कर दबाव बनाने का प्रयास किया मगर अतुल प्रधान विधानभवन के मुख्य द्वार पर स्थापित चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा के पास धरने पर बैठ गए।

नेता विरोधी दल माता प्रसाद पांडेय भी वहां पहुंचे गए। बाद में नेता विरोधी दल के अनुरोध पर अतुल प्रधान ने अपना धरना समाप्त किया। दरअसल अतुल प्रधान नियम 56 के तहत के प्रदेश की बदहाल स्वास्थ्य सेवाओं पर चर्चा की मांग कर रहे थे जोकि जनता से सीधा जुड़ा सवाल था।

सपा विधायकों का कहना था कि सरकारी अस्पतालों में न तो दवायें उपलब्ध रहती है और न ही चिकित्सक मौजूद रहते हैं जिसके चलते गरीब मरीजों को मजबूरन महंगे इलाज के लिये निजी नर्सिंग होम्स का रुख करना पड़ता है। उन्होंने झांसी मेडिकल कालेज में अग्निकांड में नवजातों की मृत्यु, महराजगंज और उन्नाव में हुयी घटनाओं का भी उल्लेख किया।

उप मुख्यमंत्री ने माकूल और बिंदुवार जवाब देने के बजाय मुद्दे को दूसरी ओर ले जाने का प्रयास किया जिसपर समाजवादी पार्टी विधायकों ने कड़ा ऐतराज किया।

वहीं, उच्च सदन विधान परिषद में सपा के सदस्यों ने बिजली विभाग के निजीकरण के मुद्दे पर सरकार से जवाब मांगा। सपा के लाल बिहारी यादव, बलराम यादव, राजेन्द्र चौधरी, जासमीर अंसारी ने बिजली विभाग के निजीकरण का मुद्दा उठाते हुए कहा कि कुछ पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाने के लिए सरकार निजीकरण कर रही है।

प्रदेश में कानून-व्यवस्था समाप्त हो गई है। भाजपा सामाजिक सदभाव को समाप्त कर नफरत फैलाकर संविधान विरोधी कार्य कर रही है

शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली ने कहा कि सरकार को बिजली उपभोक्तताओं, किसानों, कर्मचारियों और बुनकरों को भरोसे में लेना चाहिए। निजीकरण के बाद बिजली महंगी हो जाएगी। जनता पर महंगाई का बोझ पड़ेगा। उससे सब कुछ महंगा हो जाएगा। लाल बिहारी यादव ने कहा कि बिजली का निजीकरण कर अरबों-खरबों की संपत्तियों का भाजपा सरकार सौदा करना चाहती है। पूंजीपतियों को लाभ दिलाने के लिए निजीकरण किया जा रहा है। इससे बिजली विभाग में पिछड़ों, दलितों का आरक्षण खत्म हो जाएगा। विधान परिषद में ही सपा के सदस्यों ने शिक्षा के गिरते स्तर का मामला जोरदार तरीके से उठाया जिसपर सरकार निरुत्तर हो गई।

प्रदेश में बढ़ती बेरोजगारी पर समाजवादी पार्टी ने सरकार को घेरा तो भाजपा सरकार बगलें झांकने लगी। संभल में हुए दंगे को लेकर भी समाजवादी पार्टी के सदस्यों ने विधानसभा व विधानपरिषद में जबरदस्त तरीके से भाजपा सरकार को घेरा। सपा सदस्यों ने कहा कि प्रदेश में कानून-व्यवस्था समाप्त हो गई है। भाजपा सामाजिक सदभाव को समाप्त कर नफरत फैलाकर संविधान विरोधी कार्य कर रही है।

संभल जामा मस्जिद सर्वे मामले में भाजपा सरकार भाईचारा खत्म करना चाहती है। बेकसूर लोगों पर मुकदमा दर्ज किया जा रहा है। जनहित के तमाम मुद्दों पर घिरता देख भाजपा सरकार ने पूर्व निर्धारित समय से पहले ही विधानसभा व विधान परिषद के शीतकालीन सत्र को समय से पहले ही स्थगित कर बचने की कोशिश की।

नव वर्ष पर PDA के सम्मान की लड़ाई जारी रखने का संकल्प

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव से नए साल के पहले दिन एक जनवरी को बधाई देने के लिए समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ पर अपार जनसमूह उमड़ पड़ा। नववर्ष की शुभकामनाएं लेकर पहुंचने वालों में नेताओं, कार्यकर्ताओं, विधायकों, सांसदों के अलावा विभिन्न सामाजिक संगठनों, पत्रकारों, शिक्षकों, वकीलों ने श्री अखिलेश यादव को बुके, फूल और गुलदस्ता देकर शुभकामनाएं दीं। बधाई देने वालों में महिलाओं के अलावा उलेमा भी शामिल रहे। श्री अखिलेश यादव ने सभी का अभिवादन स्वीकार करते हुए नववर्ष की बधाई और शुभकामनाएं देते हुए सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि नए वर्ष पर सभी लोग अनुशासन में रहने का संकल्प लें। सभी एक दूसरे का सम्मान करें, प्रेम और भाईचारे के साथ रहें। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि नए साल में समाजवादी पार्टी किसानों, नौजवानों, महिलाओं, PDA के हक और सम्मान के लिए लड़ाई जारी रखने का संकल्प लेती है।

समाजवादी पार्टी बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर के बनाए संविधान और डॉ राममनोहर लोहिया के विचारों, नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव के बताए संघर्ष के रास्ते पर चलते हुए सभी के लिए न्याय, सम्मान और अधिकार दिलाने की लड़ाई लड़ती रहेगी।

उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी की नीतियों और कार्यों के प्रति जनता का भरोसा लगातार बढ़ता जा रहा है। समाजवादी पार्टी

का लक्ष्य 2027 में भाजपा को सत्ता से हटाकर न्याय और विकास के मार्ग को प्रशस्त करना है। 2027 में उत्तर प्रदेश में भाजपा का सत्ता से बाहर जाना तय है। पीडीए के लोग एकजुट होकर समाजवादी पार्टी की अपनी सरकार बनाएंगे। पीडीए की सरकार में कोई भी पीडीए के अधिकारों को नहीं छीन पाएगा।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि पीडीए की बढ़ती ताकत से भाजपा घबराई हुई है। भाजपा साजिश और षडयंत्र रचती रहती है। भाजपा विचार शून्य और खोखली पार्टी है। सत्ता का दुरुपयोग करती है। संविधान को नहीं मानती है। भाजपा लोकतंत्र की हत्या करने के लिए पुलिस का अनुचित इस्तेमाल करती है।

3 जनवरी को नव वर्ष के अवसर पर समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय पर प्रदेश के कई जिलों से आए कार्यकर्ताओं-नेताओं को नव वर्ष की शुभकामनाएं देते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश में सबसे बड़ी और नम्बर एक की पार्टी है। पार्टी के कार्यकर्ता जीवंत हैं। समाजवादी पार्टी के सिद्धांत सर्वश्रेष्ठ हैं। समाजवादी पार्टी का नेतृत्व बेदाग है। समाजवादी पार्टी पर जनता का भरोसा लगातार बढ़ता जा रहा है। जनता ने लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को प्रदेश में सबसे बड़ी पार्टी बनाया है। 2027 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी की सरकार बननी तय है।

इस अवसर पर पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह, राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल समेत हजारों कार्यकर्ता एवं नेता मौजूद रहे।

किसानों के मसीहा
चौधरी चरण सिंह को नमन

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी ने भारतरत्न पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह का जन्मदिन 23 दिसंबर को प्रदेश मुख्यालय लखनऊ समेत सभी जिलों में सादगी के साथ मनाया। मुख्य कार्यक्रम इटावा के हैवरा स्थित चौधरी चरण सिंह पीजी कालेज में हुआ जिसमें समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की।

चौधरी चरण सिंह डिग्री कॉलेज परिसर में समाजवादी पार्टी के संस्थापक पूर्व रक्षामंत्री नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव की प्रतिमा का श्री अखिलेश यादव ने अनावरण किया। इस अवसर पर कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

नेताजी की प्रतिमा के अनावरण के बाद श्री अखिलेश यादव ने कहा कि चौधरी चरण सिंह किसानों के बहुत बड़े नेता रहे। उन्होंने किसानों के हित में बड़े फैसले लिए। उन्होंने जीवन भर किसानों की खुशहाली के लिए काम किया। वे नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव के राजनीतिक गुरू थे। नेताजी, चौधरी चरण सिंह जी से सीख कर राजनीति में आगे बढ़े। नेताजी ने चौधरी चरण सिंह पीजी कॉलेज को बड़ा बनाया। आज यह संस्था बहुत बड़ी हो गई है। इसमें दूर-दूर से बच्चे पढ़ने आते हैं।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि इस बात की बहुत खुशी है कि चौधरी चरण सिंह के नाम से बनायी गयी संस्था में नेताजी की प्रतिमा का अनावरण हुआ है। नेताजी ने इसी मिट्टी से उठकर और इसी मिट्टी में खून,पसीना बहाकर समाजवादी विचारधारा और पार्टी को आगे बढ़ाया। नेताजी जी ने लोगों के लिए काम किया, उनके जीवन में

किसानों से मिले अखिलेश समस्याएं सुनीं

बुलेटिन ब्यूरो

सैफई से लखनऊ लौटते हुए २३ दिसंबर की रात समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव कन्नौज स्थित विशिष्ट आलू मंडी ठठिया पहुंचे जहां उन्होंने आलू किसानों, आढ़तियों और व्यापारियों से मुलाकात की। किसानों ने श्री अखिलेश यादव के सामने अपनी दिक्कतें बताईं। श्री यादव ने किसानों से कहा कि समाजवादी सरकार ने आलू किसानों की सुविधा के लिए इस विशिष्ट आलू मंडी का निर्माण किया था लेकिन भाजपा की डबल इंजन सरकार में इसकी पहचान खो गयी। ठठिया आलू मंडी आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे के किनारे समाजवादी सरकार में आलू किसानों की सुविधा और अच्छी कीमत दिलाने के लिए बनाई गई थी।

श्री अखिलेश यादव ने किसानों को बताया कि हम इस आलू मंडी को बहुत अच्छा बनाना चाहते थे। हम जैसा चाहते थे, वैसा इस सरकार ने नहीं बनने दिया। अभी लोकसभा चुनाव में भाजपा का थोड़ा इलाज हुआ है। असली इलाज २०२७ में तब होगा जब जनता विधानसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता से हटा देगी। कड़ाके की सर्दी के बीच ठठिया आलू मंडी में मौजूद सैकड़ों की संख्या में आलू किसानों से बात करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि किसान को लाभ मिलना चाहिए। उसके लिए सरकार में पहल करनी चाहिए। किसान को लाभ तभी मिलेगा जब इसी तरह से मंडी का इंतजाम हो। मंडी में होने वाली बुराइयां खत्म हो जाएं।

उन्होंने बताया कि समाजवादी सरकार में उमर्दा में टमाटर, शिमला मिर्च व अन्य बीजों के लिए इजरायल के साथ मिलकर रिसर्च इंस्टीट्यूट बनवाया था। इस सरकार ने बजट नहीं दिया। बजट दिया होता तो किसानों का लाभ बढ़ गया होता।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि यहां बड़ी संख्या में किसानों से मिलने का मौका मिला। २०२७ में समाजवादी सरकार बनने पर किसानों की मदद करेंगे। किसानों को लाभकारी मूल्य दिलाने के लिए फैसले लेंगे। पैसा किसानों की जेब में जाएगा। उन्होंने किसानों से कहा कि वे बच्चों को पढ़ाई अवश्य कराएं क्योंकि बिना पढ़ाई के आगे खुशहाली नहीं है। पढ़ाई ही सही रास्ता दिखाती है। जब कारोबार होता है तो लोग एक दूसरे से जुड़ते हैं, विकास होता है। भाजपा सरकार कारोबार नहीं बढ़ाना चाहती है। भाजपा रोजगार और किसान विरोधी है।

छुट्टा जानवरों की समस्या का समाधान गांव वाले और गांव को समझने वाले ही कर सकते हैं। छुट्टा जानवरों की समस्या का समाधान भाजपा सरकार नहीं कर सकती है। प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि छुट्टा जानवरों की समस्या का समाधान कर देंगे लेकिन नहीं कर पाए। प्रधानमंत्री ने कहा था कि किसानों की आय दोगुना कर देंगे लेकिन ये भी नहीं कर पाए और अब सरकार इस मुद्दे पर लोकसभा में जवाब नहीं दे पाती।

श्री यादव ने कहा कि किसानों के बीच बड़ी संख्या में पढ़े लिखे नौजवान हैं, वे जानते हैं कि सरकार बताती है कि देश की अर्थव्यवस्था पांचवे नंबर की बन गई है। आगे तीसरे नंबर की बन जाएगी लेकिन सरकार यह नहीं बताती कि प्रति व्यक्ति आय क्या है? आम जनता को कोई लाभ नहीं हो रहा है। सारा मुनाफा उद्योगपति कमा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि समाजवादी सरकार ने लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-वे बनाया तो भाजपा वाले हमारी बुराई करते थे। आज यह सड़क सरकार को कमाई करके पैसे दे रही है। इससे प्रतिदिन एक करोड़ ४५ लाख रुपये से ज्यादा कमा रहे हैं।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा के लोगों से सावधान रहना है। यह उद्योगपतियों को मुनाफा कराते हैं। किसानों को लाभ नहीं देना चाहते हैं। जनता के लिए काम करने के बजाय ये जगह-जगह खुदाई कर रहे हैं। ये सब महंगाई, बेरोजगारी, किसानों की समस्याओं से ध्यान हटाने के लिए खुदाई कर रहे हैं।

सकारात्मक बदलाव लाने का काम किया और धरती पुत्र कहलाए।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार किसान विरोधी है। यह सरकार किसानों के हित में फैसला नहीं लेती है। किसानों की समस्याओं से ध्यान हटाने और मुद्दों के लिए साजिश के तहत नये-नये मुद्दे उछालती है। लेकिन तानाशाह बहुत दिनों तक सत्ता में नहीं रह सकते हैं। अंत में तानाशाह को सत्ता से बाहर जाना ही पड़ता है। जो तानाशाह आज सरकार में बैठे हैं, हो सकता है उन्हें भी लगता है उनकी सरकार चलती रहेगी, लेकिन जनता सब देख रही है और समझ रही है। जनता ने अभी लोकसभा चुनाव में हिसाब-किताब किया है। 2027 के विधानसभा चुनाव में ऐसा परिणाम आयेगा कि उनका पता नहीं चलेगा।

चौधरी चरण सिंह की 122वीं जयंती पर समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय लखनऊ में भावांजलि अर्पित करते हुए उनके राजनीतिक एवं सामाजिक विचारों पर चर्चा की गई। चौधरी साहब के चित्र पर राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी ने माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। उन्होंने कहा कि चौधरी साहब आजीवन किसानों और गरीबों के लिए लड़े। किसानों के लिए वे मसीहा थे। श्री अखिलेश यादव, चौधरी साहब के रास्ते पर चलते हुए किसानों की लड़ाई लड़ते रहे हैं। समाजवादी पार्टी की प्रतिबद्धता भी उन्हीं के साथ है।

जर्मन सांसद बोले अखिलेश विजनरी राजनेता

बुलेटिन ब्यूरो

जर्मनी के फ्रैंकफर्ट से सांसद श्री राहुल कुमार कम्बोज ने 29 दिसंबर को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव से मुलाकात की। उन्होंने भेंट के दौरान श्री अखिलेश यादव के साथ पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि श्री अखिलेश यादव ने 2015 में जर्मनी का दौरा किया था, उस समय उन्होंने जो मुद्दे उठाये थे उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ था। श्री अखिलेश यादव ने जो मुद्दे उठाये वही आने वाले समय का भविष्य बना।

श्री राहुल कुमार कम्बोज ने कहा कि जर्मनी में बड़ी संख्या में भारतीय हैं। मुझे पहली बार लखनऊ आने का मौका मिला है। मैं श्री अखिलेश यादव जी से लंबे समय से सम्पर्क में हूं। मैं भारतीय मूल के लोगों की मदद के बारे में सोचता रहता हूं जिससे जर्मनी और इंडिया आपस में मिलें। संबंध अच्छे बनें।

श्री कम्बोज ने कहा कि भारत और जर्मनी दरिया के दो किनारे हैं। इन्हें मिलाने के लिए सेतु की जरूरत है। आज जर्मनी और यूरोप के अंदर जो अवसर हैं उन्हें भारत और लखनऊ में लाने की आवश्यकता है। मैं इस कार्य में लगा हूं।

श्री कम्बोज ने कहा कि कि मैं यहां मित्रता के भाव से आया हूँ। श्री अखिलेश यादव ने हमें बहुत सम्मान दिया है। मैं चाहता हूं कि जो प्रोजेक्ट और अवसर हैं उसमें हम और आगे बढ़ें। हमारे लिए युवाओं को अवसर देने का मौका है। उनके जीवन और भविष्य को अच्छी दिशा मिलेगी। श्री राहुल कुमार कम्बोज ने श्री अखिलेश यादव को जर्मनी फ्रेंकफर्ट में मई 2025 में आयोजित होने वाले कार्यक्रम के लिए आमंत्रित भी किया।

इस अवसर पर श्री अखिलेश यादव ने श्री राहुल कुमार कम्बोज का आभार प्रकट करते हुए कहा कि आने वाले समय में हम लोग मिलकर कुछ न कुछ ऐसा जरूर करें जिससे आने वाली पीढ़ी का भविष्य बने। आज सबसे ज्यादा जरूरत अच्छे सम्बंध विकसित करने की है, उसी से अवसर मिलेंगे और रास्ते खुलेंगे। आज की पीढ़ी को नौकरी रोजगार की सबसे ज्यादा जरूरत है। परिवार को खुशहाल बनाना चाहता है। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि हमें खुशी हैं कि सम्पन्न देश जर्मनी में हमें एक मित्र मिले हैं जिनसे लगातार सम्पर्क में रहकर हम दोनों देशों के बीच की दूरियां कम करेंगे।

इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव श्री शिवपाल सिंह यादव, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल, कौशाम्बी से समाजवादी पार्टी के सांसद पुष्पेन्द्र सरोज, विधायक सचिन यादव, विधायक हिमांशु यादव मौजूद थे।

नेपाल के पूर्व डिप्टी पीएम अखिलेश से मिले

सपा सरकार के कार्यों को सराहा

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव से 5 जनवरी को पार्टी के राज्य मुख्यालय, लखनऊ में नेपाल के पूर्व उपप्रधानमंत्री, सांसद और जनता समाजवादी पार्टी नेपाल के अध्यक्ष श्री उपेन्द्र यादव ने भेंट की और दोनों देशों के बीच सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा वैचारिक मसलों पर चर्चा की।

श्री अखिलेश यादव से चर्चा के दौरान श्री उपेन्द्र यादव ने बताया कि नेपाल में राजशाही को हटाकर लोकशाही की स्थापना में समाजवादियों का बड़ा हाथ रहा है। भारत में नेपाल के आंदोलनकारियों को प्रश्रय मिला। आज नेपाल के लोगों को समान नागरिकता का अधिकार मिला हुआ है। यद्यपि वहां नेपाल कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी की मिलीजुली सरकार सत्ता में है तथापि समाजवादी भी वहां कम प्रभावी नहीं हैं।

श्री उपेन्द्र यादव ने याद दिलाया कि सन् 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के समय नेपाल में ऊषा मेहता के साथ डॉ राम मनोहर लोहिया ने आजाद रेडियो स्थापित किया था। श्री जयप्रकाश नारायण और डॉ राममनोहर लोहिया को हनुमान नगर जेल तोड़कर आजाद कराया गया था। श्री अच्युत पटवर्धन और मीनू मसानी के अतिरिक्त नेताजी भी नेपाल गए थे। नेपाल में भी समाजवादियों का अच्छा प्रभाव है।

श्री उपेन्द्र यादव ने कहा कि वह 15 वर्षों बाद लखनऊ आए तो लखनऊ बहुत बदला-बदला दिखाई दिया। समाजवादी सरकार में बना जनेश्वर मिश्र पार्क, इकाना स्टेडियम, लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-वे मेट्रो रेल आदि ने प्रदेश की कायापलट कर दी है। राजधानी की सड़कों में भी काफी सुधार हुआ है।

श्री अखिलेश यादव ने भारत और नेपाल की समाजवादी वैचारिक एकता पर बल दिया और कहा कि समाजवादी विजन विकास का है। पूंजीवाद कभी विकल्प नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि एशिया के भू-राजनैतिक भूगोल में परिवर्तन के फलस्वरूप भारत के समक्ष चीन का संकट है। भारत को ग्वालियर-इटावा से लिपुलेख तक हाई-वे बनाना चाहिए। जनकपुर से अयोध्या तक और सिद्धार्थनगर से झांसी तक हाई-वे बनने से भारत-नेपाल रिश्ते और मजबूत होंगे।

श्री उपेन्द्र यादव ने श्री अखिलेश यादव को जनकपुर आने का आमंत्रण दिया। दोनों नेताओं में इस बात पर सहमति बनी कि एशिया भर के समाजवादियों का केन्द्र भारत बनेगा।

मुलाकात के इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी, संतोष यदुवंशी, हसीमुद्दीन अंसारी, डॉ पीके ठाकुर तथा श्री पंकज यादव भी उपस्थित थे।

अखिलेश ने हॉकी खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने 8 दिसंबर को ओलम्पियन हॉकी खिलाड़ी मोहम्मद शाहिद की याद में बनाए गए हॉकी स्टेडियम, गोमतीनगर पहुंच कर मौजूद खिलाड़ियों से भेंट की और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

मोहम्मद शाहिद को पद्मश्री सम्मान भी मिला था। यहां ऐस्ट्रोटर्फ पर हॉकी खिलाड़ियों के खेलने की व्यवस्था है। श्री अखिलेश यादव के साथ पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी भी रहे।

उल्लेखनीय है कि 30 दिसंबर 2016 को श्री अखिलेश यादव के कर कमलों द्वारा शिलान्यास और उद्घाटन के बाद यह हॉकी स्टेडियम बना था। श्री यादव को यह देखकर दुःख हुआ कि हॉकी खिलाड़ियों के इस मुख्य

केन्द्र के रख रखाव की कोई व्यवस्था नहीं है। समाजवादी सरकार के समय हुए सभी कामों के प्रति भाजपा सरकार उपेक्षा का भाव रख रही है।

हॉकी स्टेडियम में सर्वश्री प्रशांत शर्मा, योगिता कुमारी तथा श्रेया कुमार से श्री अखिलेश यादव मिले। ये सभी खिलाड़ी महारानी लक्ष्मीबाई अवार्ड प्राप्त हैं। सभी ने श्री अखिलेश यादव द्वारा खेल-खिलाड़ियों को दी गई सुविधाओं के लिए आभार जताया था।

गौरतलब है कि श्री अखिलेश यादव ने अपने मुख्यमंत्रित्वकाल में खेल-खिलाड़ियों के सम्मान एवं उनकी सहायता के लिए कई सराहनीय कदम उठाए थे। उनका मानना है कि अच्छा खिलाड़ी तैयार करने के लिए बच्चे को छोटी उम्र से ही बारीकियां सिखाने की जरूरत है। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने प्रशिक्षण एवं पोषक आहार की सुचारू व्यवस्था की थी। क्रिकेट, बैडमिंटन, हॉकी जैसे खेलों के साथ कुश्ती, खो-खो आदि खेलों को भी प्रोत्साहन दिया गया था। अनेक खिलाड़ियों को यश भारती सम्मान दिया गया था। इसके अतिरिक्त खेल प्रतिस्पर्धाओं में स्थान पाने वाले खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार और सरकारी संस्थाओं में राजपत्रित पदों पर नौकरी देने का भी काम किया था।

श्री अखिलेश यादव के कार्यकाल में ही राजधानी लखनऊ में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का इकॉना स्टेडियम बना जिसमें आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तरीय क्रिकेट मैच होते हैं। शहरों में साइकिल ट्रैक बनाया गया। खेलकूद का बजट बढ़ाया गया। भाजपा सरकार अपने सात वर्ष के कार्यकाल में ऐसा एक भी खेल संस्थान नहीं बना पाई। भाजपा सरकार में खिलाड़ियों को वह सम्मान नहीं मिला जो उन्हें मिलना चाहिए था।

श्री अखिलेश यादव के दौरे पर खिलाड़ियों ने कहा कि समाजवादी सरकार में खेल और खिलाड़ियों के विकास के लिए बहुत काम हुआ। खिलाड़ियों को सम्मान मिला।

अखिलेश ने ख्वाजा के उर्स के लिए चादर भेजी

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने 1 जनवरी को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय लखनऊ में महान सूफी संत हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन-चिश्ती (र.अ.) के 813वां सालाना उर्स के मौके पर मुल्क में अमन और खुशहाली, भाईचारा तथा उत्तर प्रदेश की तरक्की की कामना के साथ हजरत पीर बरकत मियां हाशमी नियाजी कौमी सदर, चिश्तिया कमेटी उत्तर प्रदेश को चादर सौंपी।

यह पवित्र चादर दरबार ख्वाजा साहब में सैयद नजर हुसैन चिश्ती गद्दी नशीन अजमेर शरीफ की सरपरस्ती में सालाना उर्स के मौके पर पेश होगी।

इस मौके पर नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पाण्डेय, राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल, राष्ट्रीय प्रवक्ता मोहम्मद आजम खान, प्रदेश उपाध्यक्ष मुजीब खां, हाफिज एजाज शाह, शमशाद फारूकी, डॉ राजेश सिंह, संजय यादव, राशिद अली, अजहर जमाल, कामरान अहमद सोनू, इरफान अहमद पिन्टू, विजय नारायण यादव मौजूद रहे।

राजपाल जी का निधन

समाजवादी परिवार शोकाकुल

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के चाचा जी श्री राजपाल सिंह यादव (73वर्ष) का लंबी बीमारी के बाद 9 जनवरी को भोर में चार बजे निधन हो गया। वे लंबे समय से बीमार थे और उनका इलाज गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में चल रहा था। उनका अंतिम संस्कार 9 जनवरी को ही पैतृक गांव सैफई में हुआ।

श्री अखिलेश यादव ने स्वर्गीय राजपाल सिंह यादव जी के पार्थिव शरीर को नमन करते हुए भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की और गहरा दुःख व्यक्त किया। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव प्रोफेसर रामगोपाल यादव जी ने श्री राजपाल सिंह यादव के निधन पर गहरा दुःख जताया है।

श्री राजपाल सिंह की प्रारंभिक शिक्षा पैतृक गांव सैफई के स्कूल में हुई। इंटर की पढ़ाई उन्होंने मैनपुरी जिले के करहल स्थित जैन इंटर कॉलेज में की। बीए इटावा केके डिग्री कॉलेज से किया और 1976

और 1977 में एमए लखनऊ विश्वविद्यालय से किया है।

इस अवसर पर श्री अखिलेश यादव, प्रो रामगोपाल यादव, शिवपाल सिंह यादव, श्रीमती डिंपल यादव, अनुराग यादव, धर्मेन्द्र यादव, अक्षय यादव, आदित्य यादव, तेज प्रताप यादव समेत समाजवादी पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेता, विधायक, सांसदों के अलावा राष्ट्रीय प्रवक्ता राजेन्द्र चौधरी, एवं परिवार के सभी सदस्य व बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

संत गाडगे: स्वच्छता अभियान के जनक

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी ने 20 दिसंबर को महान संत गाडगे महाराज की पुण्यतिथि श्रद्धापूर्वक मनाई। पार्टी के राज्य मुख्यालय लखनऊ में विधानसभा में नेता विरोधी दल माता प्रसाद पाण्डेय, पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी ने संत गाडगे के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की।

संत गाडगे को भावांजलि अर्पित करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि महान संत गाडगे जी महाराज सामाजिक क्रांति के अग्रदूत एवं स्वच्छता अभियान के जनक थे। उन्होंने सामाजिक न्याय दिलाने के

लिए कार्य किया। जीवनपर्यंत गरीबों, अनाथों एवं विकलांगों की सेवा की। उन्होंने शिक्षा प्रसार के लिए कई शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की।

सावित्री बाई फुले समाज की प्रेरणास्रोत

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने 3 जनवरी को भारत की प्रथम महिला शिक्षिका श्रीमती सावित्री बाई फुले की 193वीं जयंती पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उन्हें शत-शत नमन किया।

इस अवसर पर श्री अखिलेश यादव ने कहा कि महान समाज सेविका देश की प्रथम महिला शिक्षिका श्रीमती सावित्री बाई फुले ने शिक्षा की ज्योति प्रज्ज्वलित कर महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया था। उन्होंने विधवा विवाह कराने, छुआछूत मिटाने को अपना मिशन बनाया।

जब लड़कियों पर पढ़ने लिखने की पाबंदी थी तब कट्टरवादी लोगों से टकराकर उन्होंने पुणे में 3 जनवरी 1848 में 9 छात्राओं के साथ विद्यालय की स्थापना की जो उस समय बड़े साहस का कार्य था।

श्री यादव ने कहा कि श्रीमती सावित्री बाई फुले को समाज सुधार के काम में रूढ़िवादी समाज से विरोध में बहुत कुछ सुनना और सहना पड़ा किन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। उन्हें स्त्री अधिकारों एवं शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका के लिए हमेशा याद किया जाएगा। वह समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

न्यायप्रिय शासक थे महाराजा बिजली पासी

बुलेटिन ब्यूरो

महाराजा बिजली पासी की जयंती 25 दिसंबर को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय लखनऊ में सादगी से मनाई गई। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव की ओर से पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी ने महाराजा बिजली पासी के चित्र पर माल्यार्पण कर भावांजलि दी।

महाराजा बिजली पासी एक न्यायप्रिय शासक थे। उनका शासनकाल 11वीं-12वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में था। राजधानी लखनऊ स्थित बंगला बाजार के पास विशाल किला है। अब यह संरक्षित क्षेत्र है। महाराजा बिजली पासी ने अपने राज्य में 12 किले बनवाए थे।

इस अवसर पर महाराजा बिजली पासी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने वालों में पूर्व सांसद अरविन्द कुमार सिंह, समाजवादी शिक्षक सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो बी. पाण्डेय, पूर्व एमएलसी रामवृक्ष यादव, जियालाल वर्मा आदि शामिल रहे।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

महाकुंभ में महादानी सम्राट हर्षवर्धन को पुष्पहार समर्पण!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

@ सपा कार्यालय।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

नव वर्ष की ख़ुशनुमा शुरुआत
अपनों से हुई मुलाक़ात-बात!

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

मकर संक्रांति के पावन पर्व पर लिया माँ गंगा का आशीर्वाद।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

स्वामी विवेकानंद जयंती कार्यक्रम, सपा कार्यालय।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जो हार के डर से ग्रसित होते हैं वही नकारात्मक बातें करते हैं। नकारात्मक बातें करना डरे हुए लोगो की पहली निशानी होती है। दो राजधानियों की आपसी लड़ाई में किसीको 'हार से बचने का मंत्र' ख़ुद को देने की ज़रूरत ज़्यादा है।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

समाज को समझदारी से काम लेना होगा। ये सौहार्द को भट्टी में झोंक कर अपनी सियासी रोटी सेंकनेवाले लोग हैं।

- समाज में विभाजन करना इनकी राजनीति की पुरानी नीति है।
- भाजपा दरारवादी पार्टी है
- इनके लिए इंसान के जीवन का कोई मोल नहीं है।
- भाजपा हृदयहीन पार्टी है।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जिनका मन 'विद्वेष' से भरा है, वो 'देश' क्या चलाएँगे।

आज जो हुआ वो सिर्फ़ बाबासाहेब का ही नहीं, उनके दिये संविधान का भी अपमान है। ये भाजपा की नकारात्मक मानसिकता का एक और चरम बिंदु है।

देश ने आज जान लिया है कि भाजपाइयों के मन में बाबासाहेब को लेकर कितनी कटुता भरी है। भाजपाई बाबासाहेब के बनाये संविधान को अपना सबसे बड़ा विरोधी मानते हैं क्योंकि उनको लगता है कि वो जिस प्रकार ग़रीब, वंचित, दमित का शोषण करके, उनके ऊपर अपना प्रभुत्व कायम करना चाहते हैं, उनकी इस बद मंशा के आगे संविधान ढाल बनकर खड़ा है।

घोर निंदनीय!
घोर चिंतनीय!!
घोर आपत्तिजनक!!!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

फिरोजाबाद में 'भागवत' का सौभाग्य!

Translate post

Following

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

सुश्री @Mayawati जी को जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं ढेरों शुभकामनायें।

Akhilesh Yadav @yadava... · 26 Dec 24

सत्य और सौम्य व्यक्तित्व के धनी महान अर्थशास्त्री भूतपूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी का निधन एक अंतरराष्ट्रीय अपूरणीय क्षति है।

भावभीनी श्रद्धांजलि!

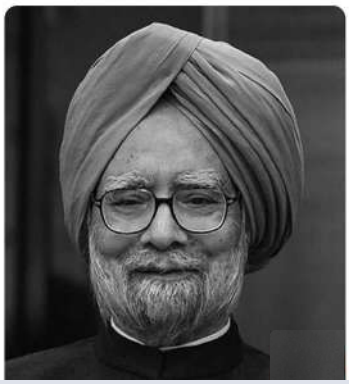

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला जी के निधन का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ। परमात्मा दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

भावभीनी श्रद्धांजलि।

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

It was a pleasure meeting Dr. Thierry Mathou, the French Ambassador to India.

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

वो लोकतंत्र कैसा जहाँ जनता के आवाज़ उठाने पर ही पाबंदी लग जाए। मतदाता का अधिकार मारना, जनतंत्र के अधिकार को मारना है।

अगर तर्क ये है कि चुनाव आयोग किस-किस को जवाब देगा तो फिर इसी बात को आधार बनाकर कल को यही भाजपा सरकार 'सूचना के अधिकार' को भी ख़त्म कर देगी।

मतदाता कहे आज का, नहीं चाहिए भाजपा!

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

गढ़कुंडार नरेश महाराजा खेत सिंह खंगार जूदेव जयंती, सपा कार्यालय।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

भाजपा राज में भ्रष्टाचार हर जगह हर पल
इस बार जिसका खुलासा हुआ वो है जल

भाजपा की हर योजना में, भ्रष्टाचार की एक कहानी छिपी होती है।

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

इधर हुक्मरान तो बस लगे रह गये ख़ुदगर्ज़ी की सियासत में
उधर कोई चुपके से अपना गाँव बसा गया उनकी रियासत में

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

प्रति किलोमीटर के हिसाब से देश का सबसे महंगा एक्सप्रेसवे 'गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे' जो कि 2022 में बनकर तैयार होना था, भाजपा सरकार के हर कार्य की तरह इंतज़ार की लाइन में लगा है। जनता कह रही है, लागत जब कई गुना बढ़ा दी गयी है, तो राइडिंग क्वॉलिटी भी उतनी ही अच्छी होनी चाहिए। अब कम से कम 2027 तक तो इसे इतने अच्छे तरह से बनाकर तैयार कर लें कि गोरखपुर वापस जाने में आसानी हो मतलब झटका कम लगे।

Translate post

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2024-2026 कुल पृष्ठ : 48 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

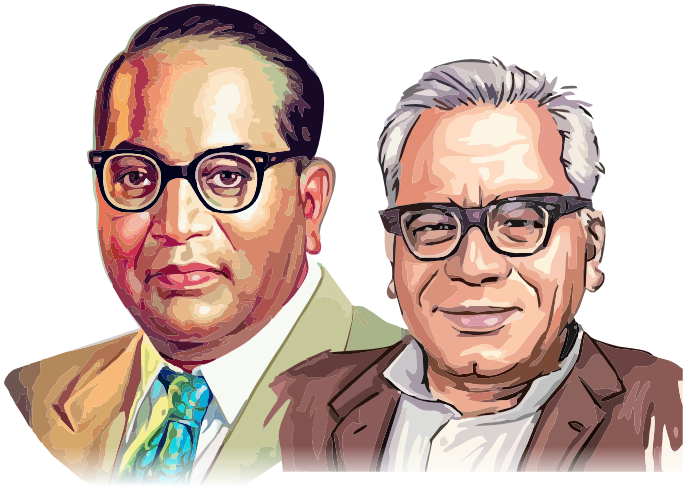

“प्रिय डॉक्टर आंबेडकर, मैनकाइंड (अखबार) पूरे मन से जाति समस्या को अपनी संपूर्णता में खोलकर रखने का प्रयत्न करेगा। इसलिए आप अपना कोई लेख भेज सकें तो प्रसन्नता होगी। आप जिस विषय पर चाहें लिखिए। हमारे देश में प्रचलित जाति प्रथा के किसी पहलू पर आप लिखना पसंद करें, तो मैं चाहूंगा कि आप कुछ ऐसा लिखें कि हिंदुस्तान की जनता न सिर्फ क्रोधित हो बल्कि आश्चर्य भी करे। मैं चाहता हूं कि क्रोध के साथ दया भी जोड़नी चाहिए। ताकि आप न सिर्फ अनुसूचित जातियों के नेता बनें बल्कि पूरी हिंदुस्तानी जनता के भी नेता बनें। मैं नहीं जानता कि समाजवादी दल के स्थापना सम्मेलन में आप की कोई दिलचस्पी होगी या नहीं। सम्मेलन में आप विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में आ सकते हैं। अन्य विषयों के अलावा सम्मेलन में खेत मजदूरों, कारीगरों, औरतों, और संसदीय काम से संबधित समस्याओं पर भी विचार होगा और इनमें से किसी एक पर आपको कुछ बात कहनी ही है।”

सप्रेम अभिवादन सहित,
आपका
राम मनोहर लोहिया

(डॉ. राम मनोहर लोहिया द्वारा 10 दिसंबर 1955 को बाबा साहेब को लिखा पत्र)

समाजवादी पार्टी
/samajwadiparty
www.samajwadiparty.in
QR कोड स्कैन करें और वाट्स-एप चैनल से जुड़ें
/Akhilesh Yadav
/Samajwadi Party